# खेती–बारी के मासिक कार्य

–डॉ शिव प्रकाश सिंह
(कृषि विशेषज्ञ)

# जनवरी

## फसलोत्पादन

**गेहूँ**

- गेहूँ में दूसरी सिंचाई बोआई के 40–45 दिन बाद कल्ले निकलते समय और तीसरी सिंचाई बोआई के 60–65 दिन बाद गाँठ बनने की अवस्था पर करें।
- बलुअर दोमट भूमि में नाइट्रोजन की शेष एक तिहाई मात्रा अर्थात् 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग दूसरी सिंचाई के बाद कर दें।
- देर से बोये गेहूँ में पहली सिंचाई बोआई के 17–18 दिन बाद करें। बाद की सिंचाइयाँ 15–20 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिये।
- भारी भूमि में प्रति हेक्टेयर 60किग्रा नाइट्रोजन (132 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग पहली सिंचाई के 4–6 दिन बाद और बलुअर दोमट भूमि में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग पहली सिंचाई पर और 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की दूसरी टाप ड्रसिंग दूसरी सिंचाई के बाद कर दें ।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार जैसे बथुआ, प्याजी या हिरनखुरी आदि की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 2, 4–डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत की 625 ग्राम मात्रा 600 लीटर पानी में घोलकर बोआई के 35 दिन बाद छिड़काव करें।
- गेहूँसा या गेहूँ के मामा (फ्लेरिश माइनर) की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 75 प्रतिशत वाली आइसोप्रोट्यूरान 1.0 किग्रा 600 लीटर पानी में या सल्फोसल्फ्यूरान (लीडर) 25 ग्राम/क्लोडिनाफाप 60 ग्राम/फिनाक्साप्राप 90 ग्राम सक्रिय तत्व 250–300 लीटर पानी में घोलकर पहली सिंचाई के बाद, परन्तु 30 दिन की अवस्था से पूर्व छिड़काव करना चाहिये।
- सल्फोसल्फ्यूरान का प्रयोग करने पर चौड़ी पत्ती व संकरी पत्ती वाले, दोनों प्रकार के खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।
- क्लोडिनाफाप या फिनाक्साप्राप के साथ 2, 4–डी नहीं मिलाना चाहिये, जबकि आइसोप्रोट्यूरान के साथ 2, 4–डी मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है।
- यदि 2, 4–डी का भी प्रयोग करना हो तो क्लोडिनाफाप या फिनाक्साप्राप के छिड़काव के एक सप्ताह बाद करना चाहिये।

- ❖ गेहूँ की फसल का चूहों से बचान के लिये जिंक फास्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया का प्रयोग करें।

**जौ**

- ❖ जौ में दूसरी सिंचाई, बोआई के 55–60 दिन बाद गांठ बनने की अवस्था पर करें।

**चना**

- ❖ हल्की दोमट मिट्टी में फूल आने से पहले ही दूसरी सिंचाई कर दें।
- ❖ भारी भूमि में फूल आने के पहले एक सिंचाई ही पर्याप्त होती है।
- ❖ सिंचाई के लगभग एक सप्ताह बाद ओट आने पर हल्की गुड़ाई करना लाभदायक होता है।
- ❖ फसल में झुलसा रोग की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 2.0 किग्रा जिंक मैग्नीज कार्बामेंट को 800 लीटर पानी में घोलकर फूल आने से पूर्व व 10 दिन के अन्तराल पर दूसरा छिड़काव करें।

**मटर**

- ❖ मटर में बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) जिसमें पत्तियों, तनों तथा फलियों पर सफेद चूर्ण सा फैल जाता है, की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर घुलनशील गंधक 3.0 किग्रा 800 लीटर पानी में घोलकर 10–12 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

**मसूर**

- ❖ बोआई के 45 दिन बाद पहली हल्की सिंचाई करें। ध्यान रखें, खेत में पानी खड़ा न रहे।

**तोरिया**

- ❖ तोरिया की फसल पक जाने पर कटाई कर लें। विलम्ब करने पर दानों के गिरने का भय रहता है।

**राई–सरसों**

- ❖ राई–सरसों में दाना भरने की अवस्था में दूसरी सिंचाई करें।
- ❖ यदि फसल में झुलसा य सफेद गेरूई रोग का प्रकोप हो तो जिंक मैग्नीज कार्बामेंट 75 प्रतिशत की 2.0 किग्रा या जीनेब 75 प्रतिशत की 2.5 किग्रा मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ माहू कीट पत्ती, तना व फली सहित सम्पूर्ण पौधे से रस चूसता है। इसके नियन्त्रण के लिये प्रति हेक्टेयर इण्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.25 लीटर या मिथाइल ओडिमेटान 25 ई.सी. 1.00 ली मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ उक्त बीमारियों या माहू का प्रकोप एक साथ होने पर किसी एक फफूँदनाशक व एक कीटनाशक को मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है।

**शीतकालीन मक्का**

- ❖ खेत की दूसरी निराई–गुड़ाई, बोआई के 40–45 दिन बाद करके खरपतवार निकाल दें।
- ❖ मक्का में दूसरी सिंचाई बोआई के 55–60 दिन बाद व तीसरी सिंचाई बोआई के 75–80 दिन बाद करनी चाहिये।
- ❖ नाइट्रोजन की 40 किग्रा मात्रा (88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रसिंग जीरा निकलने के पूर्व करें। उर्वरक प्रयोग के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिये।
- ❖ यदि भुट्टे के रूप में प्रयोग करना हो तो रसायनों का प्रयोग न करें।

**शरदकालीन गन्ना**

- ❖ आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- ❖ गन्ना को विभिन्न प्रकार के तना छेदक कीटों से बचाने के लिये प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा फ्यूराडान का प्रयोग करें।
- ❖ गन्ने के जिन खेतों में पेड़ी रखना हो उनमें या तो गन्ने की सूखी पत्तियों की 5 सेंमी मोटी तह बिछा दें अथवा फसल काट लेने के पश्चात् खरपतवार नियन्त्रण के लिये सिंचाई करके ओट आने पर गुड़ाई कर दें।

**बरसीम**

- ❖ कटाई व सिंचाई 20–25 दिन के अन्तराल पर करें। प्रत्येक कटाई के बाद भी सिंचाई करें।

**जई**

- ❖ जई में 20–25 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।
- ❖ पहली कटाई बोआई के 55 दिन बाद करें और फिर प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ जई में दूसरी और अन्तिम कटाई फूल आने पर करें।

## सब्जियों की खेती

- ❖ आलू, टमाटर तथा मिर्च में पिछेती झुलसा तथा माहू से बचाव हेतु मैंकोजेब 0.2 प्रतिशत (2 ग्रम प्रति लीटर पानी) + डाइक्लोरोवास 1.0 मि.ली. प्रति लीटर के घोल का छिड़काव करें।
- ❖ बीजोत्पादन हेतु आलू के लांक (तने) कर कटाई कर दें।
- ❖ मटर में फूल आते समय हल्की सिंचाई करें। आवश्यकतानुसार दूसरी सिंचाई फलियाँ बनते समय करनी चाहिये।

- मटर में बुकनी रोग के रोकथाम के लिये कैराथेन 600–700 मिलीलीटर या घुलनशील गंधक 2.0–2.5 किग्रा 600–700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर दें।
- गोभीवर्गीय सब्जियों की फसल में सिंचाई, गुड़ाई तथा मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- पहले रोपे गये टमाटर में सिंचाई, निराई–गुड़ाई व स्टेकिंग (सहारा देना) का कार्य करें।
- पिछले माह रोपी गई टमाटर की उन्नत/संकर किस्मों में रोपाई के 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग तथा रोपाई के 50 दिन बाद इसी दर से यूरिया की दूसरी टाप ड्रेसिंग करनी चाहिये।
- टमाटर की ग्रीष्मकालीन फसल के लिये रोपाई कर दें।
- टमाटर की रोपाई के समय उन्नत प्रजातियों के लिये प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फोरस, 60–80 किग्रा पोटाश (50 किग्रा यूरिया, 110 किग्रा डी.ए.पी. या 88 किग्रा यूरिया व 312 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 100–132 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) एवं जिंक व बोरान की कमी होने पर 20–25 किग्रा जिंक सल्फेट व 8–12 किग्रा बोरैक्स का प्रयोग करें। संकर/असीमित बढ़वार वाली किस्मों के लिये उर्वरक की अन्य मात्रा के साथ 60 किग्रा नाइट्रोजन (132 किग्रा यूरिया) प्रयोग करना चाहिये।
- टमाटर की ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिये कम व अधिक बढ़ने वाले, दोनों प्रकार की प्रजातियों की रोपाई 60×45 सेंमी पर करें।
- टमाटर में खरपतवार के नियन्त्रण के लिये प्रति हेक्टेयर स्टाम्प 1.0 किग्रा (सक्रिय तत्व) रोपण के दो दिन बाद प्रयोग करना चाहिये।
- लहसुन की फसल में 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई तथा गुड़ाई करें।
- लहसुन में नाइट्रोजन की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग बोआई के 60 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 74 किग्रा यूरिया की दर से करनी चाहिये।
- माह के दूसरे सप्ताह तक प्याज की रोपाई कर दें।
- शिमला मिर्च में रोपाई के 20 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 34 किग्रा नाइट्रोजन (74 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग करनी चाहिये।
- पालक की पत्तियाँ काटकर बाजार भेजें। यदि पालक का बीज लेना हो तो पत्तियाँ काटना बन्द कर दें। रोगी पौधों को उखाड़ दें तथा 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से खड़ी फसल में यूरिया की टाप ड्रेसिंग कर दें।
- जायद में मिर्च तथा भिण्डी की फसल के लिये खेत की तैयारी अभी से आरम्भ कर दें
- मिर्च की जायद फसल के लिये पौधशाला में बीज की बोआई कर दें।

- ❖ जायद मिर्च के एक हेक्टेयर क्षेत्र में रोपाई के लिये 800–1000 ग्राम बीज तथा संकर किस्मों हेतु 200–300 ग्राम बीज पर्याप्त होता हैं।
- ❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर 200–300 कु0 गोबर/कम्पोस्ट की सड़ी खाद या 70–80 कु0 नादेप कम्पोस्ट भूमि में मिलाते हैं।
- ❖ बोआई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 16–17 किग्रा नाइट्रोजन, 25 किग्रा फास्फोरस व 25 किग्रा पोटाश (16 किग्रा यूरिया,55 किग्रा डी.ए.पी. अथवा 35 किग्रा यूरिया, 156 किग्रा किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 42 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) आपस में मिलाकर बोने वाली नालियों के स्थान पर डालकर मिट्टी में मिला दें और थाले बनाकर उनमें 2–3 बीज की बोआई कर दें।

## फलों की खेती

- ❖ बागों की निराई–गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।
- ❖ आम के नवरोपित एवं अमरूद, पपीता एवं लीची के बागों की सिंचाई करें।
- ❖ आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास 0.04 प्रतिशत अथवा डायमेथोएट का 0.06 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- ❖ आँवला के बाग में गुड़ाई करें एवं थाले बनायें।
- ❖ आँवला के एक वर्ष के पौधे के लिये 10 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 100ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फास्फोरस व 75 ग्राम पोटाश (220 ग्राम यूरिया,312ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 125 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) देना आवश्यक होगा। 10 वर्ष या उससे ऊपर के पौधे में यह मात्रा बढ़कर 100 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 1किग्रा नाइट्रोजन, 500 ग्राम फास्फोरस व 750 ग्राम पोटाश (2200 ग्राम यूरिया 3120 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट च 1250 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) हो जायेगी। उक्त मात्रा में पूरा फास्फोरस, आधी नाइट्रोजन व आधी पोटाश की मात्रा का प्रयोग जनवरी मास में करें।
- ❖ अंगूर में कटाई–छँटाई का कार्य पूरा कर लें।
- ❖ अंगूर में प्रथम वर्ष गोबर/कम्पोस्ट खाद के अलावा 100 ग्राम नाइट्रोजन, 60 ग्राम फास्फोरस व 80 ग्राम पोटाश (220ग्राम यूरिया, 375 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 135 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति पौधा आवश्यक होता है। 5 वर्ष या इसके ऊपर यह मात्रा बढ़कर 500 ग्राम नाइट्रोजन, 300 ग्राम फास्फोरस व 400 ग्राम पोटाश (1100 ग्राम यूरिया, 1875 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 675 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) हो जाती हैं। फास्फोरस की सम्पूर्ण मात्रा तथा नाइट्रोजन व पोटाश की आधी मात्रा कटाई–छँटाई के बाद जनवरी माह में दें।

## वानिकी

❖ पापलर की रोपाई 5×4 मीटर पर करें।

## पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे

❖ गुलाब में समय–समय पर सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई करें तथा आवश्यकतानुसार बडिंग व इसके जमीन में लगाने का कार्य कर लें।

❖ ग्लैडियोलस की मुरझाई हुई ट्हनियों को निकाल दें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

❖ गेंदा कें बीज की बोआई पौधशाला में कर दें। एक हेक्टेयर क्षेत्र में रोपाई के लिये 1.5 किग्रा बीज की आवश्यता पड़ती है।

❖ रजनीगंधा के बल्बों के रोपण हेतु क्यारियों में 45 सेंमी गहरी खुदाई करके 15 दिनों के लिये छोड़ दे।

❖ मेंथा के सकर्स की रोपाई कर दें। एक हेक्टेयर के लिये 2.5–5.0 कुन्टल सकर्स आवश्यक होगा।

❖ एच.वाई.–77, कोसी व गोमती मेंथा की उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।

❖ मेंथा में प्रति हेक्टेयर 100–150 कुन्तल गोबर की खाद, 40–50 किग्रा नाइट्रोजन (88–110 किग्रा यूरिया), 50–60 किग्रा फास्फोरस (312–375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट) एवं 40–45 किग्रा पोटाश (67–75 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) अन्तिम जुताई के समय भूमि में मिला दें

❖ मेंथा की रोपाई 45–60 सेंमी दूरी पर बनी लाइनों में 2–3 सेंमी गहराई में करते हैं।

## पशुपालन/दुग्ध विकास

❖ पशुओं को ठण्ड से बचायें। उन्हें टाट/बोरे से ढँके। पशुशाला में जलती आग न छोड़े।

❖ पशुशाला में बिछाली को सूखा रखें।

❖ पशुओं के भोजन में दाने की मात्रा बढ़ा दें।

❖ गन्ने के अगोले के साथ बरसीम का चारा मिलाकर पशुओं को दें।

❖ पशुओं में लीवर फ्लूक के नियंत्रण हेतु कृमिनाशक दवा पिलवायें।

❖ खुरपका, मुँहपका रोग से बचाव के लिये टीका अवश्य लगवायें।

❖ पशुओं के बच्चों को जूँ से बचाने के लिये दवा लगायें।

❖ बांझपन की चिकित्सा तथा गर्भपरीक्षण करायें।

❖ सर्दी में थन चिटक जाते हैं। अतः दुहने के बाद जीवाणुनाशक मलहम/मक्खन लगा दें।

## मुर्गीपालन

❖ अण्डे देने वाली मुर्गियों को लेयर फीड दें।

- ❖ सीप का चूरा दें।
- ❖ ब्रायलर के लिये एक दिन के चूजे पालें।
- ❖ चूजों को पर्याप्त रोशनी तथा गर्मी दें।

# फरवरी

## फसलोत्पादन

**गेहूँ**

- ❖ बोआई के समय के हिसाब से गेहूँ में दूसरी सिंचाई बोआई के 40–45 दिन बाद तथा तीसरी सिंचाई 60–65 दिन की अवस्था में कर दें। चौथी सिंचाई बोआई के 80–85 दिन बाद वाली निकलने के समय करें।
- ❖ अनावृत कण्डुवे की रोगी बाली, जो खेत में जल्दी निकल आती है, दिखाई देते ही उसे निकाल कर जला दें।
- ❖ गेहूँ के खेत में चूहों का प्रकोप होने पर जिंक फास्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया का प्रयोग करें। चूहों की रोकथाम के लिये सामूहिक प्रयास अधिक सफल होगा।

**जौ**

- ❖ जौ में यदि तीन सिंचाई उपलब्ध हो तो दूसरी सिंचाई बोआई के 55–60 दिन बाद गांठ बनाने की अवस्था में और तीसरी सिंचाई दुधियावस्था में बोआई के 95–100 दिन बाद करें।
- ❖ जौ की फसल में निराई–गुड़ाई का अच्छा प्रभाव होता है।
- ❖ खेत में यदि कण्डुवा रोग से ग्रस्त बाली दिखाई दे तो उसे निकाल कर जला दें।
- ❖ गेहूँसा या गेहूँ का मामा (फ्लेरिस माइनर) दिखाई देने पर उसे निकाल दें।

**चना**

- ❖ चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाव के लिये फली बनना शुरू होते ही क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 1.50 लीटर या साइपरमेथ्रिन 10.0 ई.सी. 750 मिलीलीटर अथवा फेनवेलरेट 20 ई.सी. 750 मिलीलीटर मात्रा 800–1000 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर 2 बार छिड़काव करें।
- ❖ चने की फसल में झुलसा रोग के रोकथाम के लिये जिंक मैग्नीज कार्बामेंट 2.0 किग्रा अथवा जीरम 90 प्रतिशत 2 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**चना/मसूर**

- ❖ यदि जाड़े की वर्षा न हुई तो फलियाँ बनते समय हल्की सिंचाई की आवश्कता पड़ेगी।

**मटर**

- ❖ मटर में बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 3.0 किग्रा घुलनशील गन्धक या कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम या ट्राइडोमार्फ 80 ई.सी. 500 मिलीलीटर की दर से 12–14 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करें।

**राई**

- ❖ माहू कीट की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर मिथाइल ओडिमेटान 25 ई.सी. 1.0 लीटर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 1.50 लीटर या मैलाथियान 50 ई.सी. 1.50 लीटर का प्रयोग करना चाहिये।

**मक्का**

- ❖ रबी मक्का में तीसरी सिंचाई, बोआई के 75–80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई 105–110 दिन बार कर दें।
- ❖ बसन्तकालीन मक्का की बोआई पूरे माह की जा सकती है।
- ❖ प्रति हेक्टेयर बोआई के लिये संकर प्रजातियों के लिये 20 किग्रा व संकुल प्रजातियों के लिये 22–25 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ बोआई 60×20 सेंमी की दूरी पर करें।
- ❖ प्रति हेक्टेयर 120 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फेट तथा 40 किग्रा पोटाश में से नाइट्रोजन की तिहाई मात्रा व फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा (42 किग्रा यूरिया, 132 किग्रा डी.ए.पी. या 88 किग्रा यूरिया व 375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 67 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) बोआई के समय प्रयोग करना चाहिये।

**गन्ना**

- ❖ शरदकालीन गन्ने में बोआई के 110–120 दिन बाद नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा (60–75 किग्रा प्रति हेक्टेयर) की टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ बसन्तकालीन गन्ने की बोआई देर से काटे गये धान वाले खेत में और तोरिया/मटर/आलू की फसल से खाली हुये खेत में की जा सकती है।
- ❖ गन्ने की मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रमुख किस्में हैं– को.शा.767, को.शा. 802,को.शा.7918,को.शा.8118,को.शा.8432,को.शा.94257, को.शा.97264,को.से. 95422 व यू.पी.953; जल्दी तैयार होने वाली किस्में हैं– को.पन्त 211, को.शा. 687 व को.शा.8436 को.शा. 88230,को.शा. 95255, को.शा. 96268, को.से.

95436, को.से. 98231, को.से. 00235, को.से.01235 व को.जे. 64। जल–निकास की समस्या वाले क्षेत्रों के लिये बी.ओ. 54 व बी.ओ. 91 अच्छी किस्में हैं।

- ❖ सी.ओ. 0238, सी.ओ. 0239, व सी.ओ. 0118 पूरे प्रदेश के लिए संस्तुत उच्च उत्पादकता वाली प्रजातियाँ हैं।
- ❖ एक हेक्टेयर बोआई के लिये 60–70 कु0 गन्ना पर्याप्त होता है।
- ❖ गन्ना का बीज जिस खेत से लेना हो, बोआई से दो सप्ताह पूर्व उसकी सिंचाई कर दें।
- ❖ गन्ने का उपचारित बीज प्रयोग करें। उपचार हेतु कार्बेन्डाजिम अथवा बावेस्टीन 100 ग्राम व मैलाथियान 50 ई.सी. 250 मिली0 अथवा डाइमोथोएट 30 ई.सी. 300 मिली0 100 लीटर पानी में घोल कर 15 मिनट तक गन्ने के टुकडों को डुबोकर शोधित कर लें। 100 लीटर पानी में बना घोल 25 कु0 बीज उपचारित करने के लिये पर्याप्त होगा।
- ❖ उपचारित बीज की बोआई 75–90 सेंमी की दूरी पर कतारों में 10 सेंमी की गहराई में करें।
- ❖ उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। यदि परीक्षण की सुविधा उपलब्ध न हो तो बोआई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 60–75 किग्रा नाइट्रोजन, 80 किग्रा फास्फोरस व 60 किग्रा पोटाश (70–102 किग्रा यूरिया, 175 किग्रा डी.ए.पी. या 132–165 किग्रा यूरिया व 500 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- ❖ फसल को दीमक व अंकुर बेधक कीट से बचाने के लिये कूंड़ ढकने से पूर्व 3.0 लीटर क्लोरपायरीफॉस 1000 लीटर पानी में घोलकर बोये हुये गन्ने के टुकड़ो के ऊपर छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने की दो कतारों के बीच उर्द या मूंग की दो कतारें अथवा भिण्डी या लोबिया की एक कतार की बोआई की जा सकती हैं
- ❖ गन्ने की पेडी से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि खेत से खरपतवार निकाल दें और सिंचाई करें तथा मिट्टी में ओट आने पर 90 किग्रा नाइट्रोजन (195 किग्रा यूरिया) की पहली टाप ड्रेसिंग करें और कल्टीवेटर से गुड़ाई करके उर्वरक को मिट्टी में मिला दें।

**हरा चारा**

- ❖ बरसीम में कटाई 20–25 दिन के अन्तराल पर करें।
- ❖ बरसीम व जई में 20–25 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

- ❖ जई में पहली कटाई, बोआई के 55 दिन बाद करें और कटाई के बाद सिंचाई करके प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन की दूसरी टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ गर्मी में चारे के लिये मक्का, चरी और लोबिया की बोआई माह के दूसरे पखवाड़े से प्रारम्भ की जा सकती है।
- ❖ मक्का का गंगा 2, पूसा कम्पोजिट–3, विजय व अफ्रीकन टाल प्रजातियों की बोआई 40 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से, लोबिया की एसियन जाइन्ट यू.पी.सी. 4200,यू.पी.सी. 5286, यू.पी.सी. 5287, 35 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से तथा चरी में एम.पी. चरी, पूसा चरी 23, पंत चरी 2, पंत चरी 3 व पायनियर की संकर चरी की बोआई 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर बीज दर से करनी चाहिये।

## सब्जियों की खेती

- ❖ आलू और टमाटर की फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिये मैंकाजेब 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम एक लीटर पानी में घोलकर) छिड़काव करें।
- ❖ लांक कटे आलू के छिलके मजबूत हो जाने पर खुदाई करके छाया में ढेर लगाकर सुखा दें।
- ❖ ग्रीष्मकालीन मिर्च व बैगन की रोपाई के लिये फरवरी माह उपयुक्त है।
- ❖ गोभी में पत्ती खाने वाले कीट की रोकथाम के लिये इन्डोसल्फान 35 ई.सी. 0.15 प्रतिशत (1.5 मिलीलीटर दवा एक लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव करना चाहिये।
- ❖ टमाटर की उन्नत/संकर किस्मो में रोपाई के 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग तथा रोपाई के 50 दिन बाद इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग एवं संकर टमाटर में रोपाई के 65 दिन बाद 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की तीसरी टाप ड्रेसिंग करनी चाहिये।
- ❖ प्याज में प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन की सम्पूर्ण 100 किग्रा मात्रा का 1/3 भाग (72 किग्रा यूरिया) रोपाई के 30 दिन बाद सिंचाई कर टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ प्याज को पर्पिल ब्लाच से बचाने के लिये 0.2 प्रतिशत मैंकोजेब और यदि थ्रिप्स कीट लगे हो तो डाइमेथोएट 30 ई.सी 1.0 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ लहसुन में यदि नाइट्रोजन की दूसरी टाप ड्रेसिंग न की हो तो यूरिया की 75 किग्रा मात्रा बोआई के 60 दिन बाद डालकर सिंचाई करें। रोग एवं कीट से बचाव के लिये एक सुरक्षात्मक छिड़काव मैंकोजेब 2 ग्राम तथा डाइमेथोएट 30 ई.सी 1.0 लीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर करें।
- ❖ फ्रेन्चबीन (राजमा) में फलियां बनते समय दूसरी सिंचाई कर दें। फिर आवश्यकतानुसार भूमि में नमी की मात्रा कम होने पर (50 प्रतिशत से) हल्की सिंचाई करें।

- सब्जियों के लिये खेत तैयार करते समय प्रति हेक्टेयर 250–300 कु0 गोबर/कम्पोस्ट खाद या 70–80 कु0 नादेप कम्पोस्ट डालकर मिला दें।
- लोबिया की बोआई के लिये इस समय पूसा दो फसली, लोबिया 263, पूसा फागूनी, पूसा रितुराज, पूसा 1103, स्वर्ण हरिता व नरेन्द्र लोविया–1 उपयुक्त किस्में हैं।
- लोबिया को 40–45×10–15 सेंमी की दूरी पर बोआई करने पर प्रति हेक्टेयर 20–25 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- लोबिया की अच्छी फसल के लिये 40 किग्रा नाइट्रोजन, 50–60 किग्रा फास्फोरस व 50 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यक होगा। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा (44 किग्रा यूरिया व 312–375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 84 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) बोने से पहले या बोआई के समय दें।
- भिण्डी की बोआई 30–45 सेंमी दूर कतारों में 20–30 सेंमी की दूरी पर करें। बोआई के लिये प्रति हेक्टेयर 18–20 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- बोआई से पूर्व भिण्डी के बीज को 24 घण्टे पानी में भिगो लेना चाहिये।
- भिण्डी के प्रति हेक्टेयर के लिये 100–120 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फोरस व 50 किग्रा पोटाश की आवश्यकता होती है। बोआई के समय फास्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा तथा नाइट्रोजन का 1/3 भाग (35–50 किग्रा यूरिया, 110 किग्रा डी.ए.पी. या 74–88 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 84 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रयोग करें।
- ग्रीष्म काल में चौलाई की बोआई प्रति हेक्टेयर 2–3 किग्रा बीज रेत में मिलाकर छिटकवां या 20–25 सेंमी दूर कतारों में करें।
- चौलाई में प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फोरस व 30 किग्रा पोटाश (70 किग्रा यूरिया, 110 किग्रा डी.ए.पी. या 110 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 50 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) बोआई के समय प्रयोग करें।
- चौलाई में बोआई के तुरन्त बाद सिंचाई करें। पुनः 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।
- लौकी की बोआई 3–4×.75 मीटर पर कर सकते हैं, जिसके लिये प्रति हेक्टेयर 4–5 किग्रा बीज आवश्यक होता है। बोआई 80–100 सेंमी चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ो पर दो बीज प्रति स्थान करें।
- खीरा की बोआई 1.5–2×0.50–0.60 मीटर पर 30 सेंमी चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ो पर करें। इसके लिये प्रति हेक्टेयर 2–2.5 किग्रा बीज का प्रयोग करना चाहिये।

- ❖ खरबूजा की बोआई 1.5–2×0.50–0.60 मीटर पर 30 सेंमी चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ो पर 2–3 किग्रा प्रति हेक्टेयर बीज दर से करें।
- ❖ तरबूज की बोआई 2.5–3×0.60 मीटर पर 40 सेंमी चौड़ी नाली की दोनों मेड़ो पर करते हैं। इसके लिये प्रति हेक्टेयर 4–5 किग्रा बीज लगता हैं
- ❖ चिकनी तोरी, आरा तोरी व करेला की बोआई 40 सेंमी चौड़ी नाली की दोनों मेड़ो पर 2.5–3×0.60 मीटर की दूरी पर करनी चाहिये। इनके लिये प्रति हेक्टेयर 5–6 किग्रा बीज आवश्यक होता है।
- ❖ कुम्हड़ा की बोआई 3–4×0.75 मीटर की दूरी पर 80–100 सेंमी चौड़ी नाली की दोनों मेंड़ो पर करते हैं। इसके लिये प्रति हेक्टेयर 4–6 किग्रा बीज आवश्यक होगा।
- ❖ कतार से कतार 2 मीटर की दूरी पर 30–40 सेंमी चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर 30–45 सेंमी की दूरी पर टिण्डा व ककड़ी के बीज की बोआई करते हैं। टिण्डा के लिये प्रति हेक्टेयर 5–6 किग्रा व ककड़ी के लिये 2–3 किग्रा बीज की आवश्यकता है।
- ❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों की बोआई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 16–17 किग्रा नाइट्रोजन, 25 किग्रा फास्फोरस व 25 किग्रा पोटाश (17 किग्रा यूरिया, 55 किग्रा डी.ए.पी. या 35 किग्रा यूरिया, 156 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 42 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) आपस में मिलाकर बोने वाले नालियों के स्थान पर डालकर मिट्टी में मिला दें।
- ❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों की बोआई के लिये नाली की गहराई 15–20 सेंमी रखनी चाहिये।

**बागवानी**

- ❖ अंगूर में यदि जनवरी में उर्वरक न दिया गया हो तो एक साल के वृक्ष के लिये प्रति पौधा 10 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन, 60 ग्राम फास्फोरस तथा 40 ग्राम पोटाश (110 ग्राम यूरिया, 375 सिंगल सुपर फास्फेट तथा 68 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) और क्रमशः बढ़ाकर 5 वर्ष या अधिक उम्र के लिये 40 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम नीम की खली, 250 ग्राम नाइट्रोजन (550 ग्राम यूरिया), 300 ग्राम फास्फोरस (1875 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) तथा 200 ग्राम पोटाश (335 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- ❖ लीची के एक वर्ष के पौधे में 5 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन (110 ग्राम यूरिया), 25 ग्राम फास्फोरस (156 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) व 50 ग्राम पोटाश (85 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) की मात्रा जिसे क्रमशः बढ़ाकर 10 वर्ष या उससे अधिक आयु के वृक्ष में 50 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 500 ग्राम

नाइट्रोजन (1100 ग्राम यूरिया), 250 ग्राम फास्फोरस (1560 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) व 500 ग्राम पोटाश (850 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें।

- नींबू के एक वर्ष के पौधे में 10 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 25 ग्राम नाइट्रोजन (55 ग्राम यूरिया), 50 ग्राम फास्फोरस (156 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) व 25 ग्राम पोटाश (42 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें। यह मात्रा क्रमशः बढ़कर 10 वर्ष या उससे अधिक आयु के वृक्ष में 90–100 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 250 ग्राम नाइट्रोजन (550 ग्राम यूरिया), 500 ग्राम फास्फोरस (3125 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) व 250 ग्राम पोटाश (420 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करना होगा।
- अमरूद के एक वर्ष के पौधे के लिये 10 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 30 ग्राम नाइट्रोजन (65 ग्राम यूरिया), 30 ग्राम फास्फोरस (187 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट) व 60 ग्राम पोटाश (100 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा 6 वर्ष या अधिक उम्र के पौधे के लिये यह मात्रा बढकरक क्रमशः गोबर की खाद 60 किग्रा, नाइट्रोजन 180 ग्राम (390 ग्राम यूरिया), फास्फोरस 180 ग्राम (1125 ग्राम) व पोटाश 360 ग्राम (600 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) हो जाती है।
- केला में नाइट्रोजन की 25 ग्राम (55 ग्राम यूरिया) मात्रा पौधे से 40–50 सेंमी दूर गोलाई में डालकर चारों तरफ गुड़ाई कर मिट्टी में मिला दें।
- फल वृक्षों में उर्वरक देने के लिये अच्छा होगा कि वृक्ष के तने के छत्र के नीचे किनारों तक डालकर जमीन में 10–15 सेंमी मिलाकर सिंचाई कर दें।
- सिंचाई की सुविधा होने पर आम, अमरूद, आंवला, कटहल, लीची, व पपीता, के बाग का रोपण करें।
- अमरूद एवं आंवला के नये बाग में अन्तरासस्य के रूप में टमाटर, भिण्डी, मिर्च व लोबिया की बोआई करें।
- आम में खर्रा रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) से बचाव के लिये माह के प्रथम पक्ष में सल्फेक्स 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम दवा 1 लीटर पानी में घोलकर) घोल का छिड़काव करें। द्वितीय पक्ष में कैराथेन या कैलिक्सिन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिये मोनोक्रोटोफास अथवा क्यूनालफॉस 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करें।

**वानिकी**

- पापलर के वृक्ष लगाने का समय है। रोपाई 5×4 मीटर पर करें।
- इसमें 3–4 वर्षों तक खरीफ और रबी दोनों मौसम में फसलें उगाई जा सकती हैं। आगे चलकर केवल रबी में फसल उगानी चाहिये।

### पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे

- ❖ गुलाब में सूखे फलों व अनावश्यक अंकुरों को तोड़ दें।
- ❖ बसन्तकालीन बहार के लिये घुली हुई खाद देना चाहिये तथा आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व सिंचाई करते रहें।
- ❖ ग्लैडियोलस की मुरझाई टहनियों को निकाल दें तथा स्पाइक का विपणन करें।
- ❖ रजनीगन्धा के बल्बों के रोपण से 10–15 दिन पूर्व क्यारियों में प्रति वर्गमीटर 10 किग्रा गोबर या कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 80–100 ग्रम म्यूरेट ऑफ पोटाश की बेसल ड्रेसिंग करें।
- ❖ गुलदावदी के सकर्स को अलग करके गमलों में लगा दें।
- ❖ गर्मी के फूलों जैसे जीनिया, सनफ्लावर, पोर्चुलाका व कोचिया के बीजों को नर्सरी में बोयें।
- ❖ मेंथा में 10–12 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा बोआई के 30 दिन बाद निराई–गुड़ाई कर दें।
- ❖ लेमन ग्रास की रोपाई इस माह में भी की जा सकती है।

### पशुपालन/दुग्ध विकास

- ❖ पशुओं को निर्धारित मात्रा में दाना तथा मिनरल मिक्स्चर अवश्य दें।
- ❖ खुरपका–मुँहपका का टीका अवश्य लगवायें (यदि अभी तक न लगवाया हो)
- ❖ बरसीम भूसे के साथ मिलाकर दें।
- ❖ पशुओं को ठंड से बचायें तथा ताजा एवं स्वच्छ पानी पीने को दें।

### मुर्गीपालन

- ❖ मुर्गी गृह में प्रकाश एवं गर्मी की पर्याप्त व्यवस्था करें।
- ❖ मुर्गियों को कृमिनाशक दवा दें।
- ❖ मुर्गियों को अतिरिक्त उर्जा हेतु दाना दें।
- ❖ लिटर को सूखा रखें तथा स्वच्छ पानी सदैव उपलब्ध रखें।

# मार्च

### फसलोत्पादन

**गेहूँ**

- ❖ बोआई के समय के अनुसार गेहूँ में दाने की दुधियावस्था में 5वीं सिंचाई बोआई के 100–105 दिन की अवस्था पर और छठीं व अन्तिम सिंचाई बोआई के 115–120 दिन बाद दाने भरते समय करें।
- ❖ जिस गेहूँ की बोआई मध्य दिसम्बर के आस–पास हुई हो, उनमें चौथी सिंचाई पुष्पावस्था पर और पाँचवी सिंचाई दुधियावस्था पर करें।

- ❖ गेहूँ में इस समय हल्की सिंचाई (5 सेंमी) ही करें। तेज हवा चलने की स्थिति में सिंचाई न करें, अन्यथा फसल गिरने का डर रहता है।
- ❖ गेहूँ की फसल को चूहों से बचाने के लिये जिंक फास्फाइड अथवा बेरियम कार्बोनेट से बने चारे का प्रयोग करें।

**जौ**

- ❖ यदि जौ की बोआई देर से हुई हो तो इसमें तीसरी और अन्तिम सिंचाई दुधियावस्था में बोआई के 95–100 दिन की अवस्था में करें।

**चना**

- ❖ चने की फसल में दाने बनने की अवस्था में सिंचाई करें।
- ❖ चने की फसल में दाना बनने की अवस्था में फलीछेदक कीट का अत्यधिक प्रकोप होता है। फली छेदक कीट की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर इण्डोसल्फान 35 ई.सी. दवा की 1.25 लीटर अथवा क्यूनालफॉस 25 ई.सी दवा की 1.5 लीटर मात्रा 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**मसूर**

- ❖ धान के खेतों में बोई गई मसूर की फसल में, यदि वर्षा न हो तो एक हल्की सिंचाई फली बनने के समय करनी चाहिये।

**मक्का**

- ❖ बसन्तकालीन मक्का में बोआई के 20–25 दिन बाद निराई – गुड़ाई करनी चाहिये तथा उसके पश्चात् सिंचाई कर दें।
- ❖ पौधों के घुटने की ऊँचाई तक का हो जाने पर प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ रबी मक्का में उचित नमी बनाये रखने के लिये आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

**गन्ना**

- ❖ गन्ना की बोआई का कार्य 15–20 मार्च तक पूरा कर लें।
- ❖ मध्य एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिये को.शा. 7918, को.से. 92423, को.शा. 93259, को.शा. 802, को.शा. 767, को.शा. 8118, को.शा. 90269, यू.पी. 39 तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिये को.शा. 7918, को.शा. 767, को.शा. 94257, को. शा. 93278, को.शा. 8407, यू.पी. 15, यू.पी. 22 मध्य एवं देर से पकने वाली प्रजातियाँ हैं।
- ❖ सी.ओ. 0238, सी.ओ. 0239, व सी.ओ. 0118(देर से बोआई के लिए भी उपयुक्त) पूरे प्रदेश के लिए संस्तुत उच्च उत्पादकता वाली प्रजातियाँ हैं।

- ❖ शीघ्र पकने वाली प्रजातियों में पश्चिमी व मध्य क्षेत्र के लिये को.शा. 687, को.शा. 8436, को.शा. 88230, को.शा. 92254, तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिये को.शा. 687, को.शा. 8436, को.शा. 88230 उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।

- ❖ गन्ने के लिये प्रति हेक्टेयर 50–60 कुन्तल बीज (35000–40000 बीजू टुकड़े) पर्याप्त होगा।
- ❖ बोआई 75–90 सेंमी दूर बनी कूड़ो में 10 सेंमी की गहराई में करें।
- ❖ गन्ना की खेती के लिये गोबर की खाद/कम्पोस्ट/हरी खाद/ नीम खली आदि का प्रयोग लाभदायक होता है।
- ❖ उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें, यदि परीक्षण न हुआ हो तो बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 60–75 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस व 50 किग्रा पोटाश (85–118 किग्रा यूरिया, 132 किग्रा डी.ए.पी. या 132–165 किग्रा यूरिया,375 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- ❖ तीन आँखे वाले गन्ने के टुकड़े को दवा में 5 मिनट तक उपचारित करके बोयें। 250 ग्राम एरीटन अथवा 500 ग्राम एग्लाल 100 लीटर पानी में घोलकर उससे 25 कुन्तल गन्ने के टुकड़ों को उपचारित किया जा सकता है।
- ❖ दीमक, जड़ तथा तनाछेदक कीटों से बचाने के लिये कूँड़ में बोये गये गन्ने के ऊपर 5–6 लीटर गामा बी.एच.सी. (20 ई.सी.) को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से बोये टुकड़ो के ऊपर छिड़काव मिट्टी से ढक दें।
- ❖ गन्ने की दो कतारों के मध्य उर्द अथवा मूँग की दो–दो कतारें या भिण्डी की एक कतार मिलवाँ फसल के रूप में बोई जा सकती है।
- ❖ यदि गन्ने के साथ सहफसली खेती करनी हो तो गन्ने की दो कतारों के बीच की दूरी 90 सेंमी रखें।
- ❖ गन्ने की पेड़ी से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये खेत से खरपतवार निकाल दें या खरपतवार के रासायनिक नियन्त्रण के लिये उनके उगने से पूर्व पेड़ी की कलिकाओं के निकलते समय (रैटूनिंग) प्रति हेक्टेयर एट्राजीन 2.0 किग्रा (सक्रिय तत्व) का छिड़काव करना चाहिये।
- ❖ पेड़ी की फसल में 12–15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।
- ❖ पेड़ी की फसल में प्रति हेक्टेयर 180 किग्रा नाइट्रोजन प्रयोग करना चाहिये। नाइट्रोजन की सम्पूर्ण मात्रा का आधा भाग अर्थात् 90 किग्रा (195 किग्रा यूरिया) फसल काटने के बाद तथा इतनी ही मात्रा दूसरी या तीसरी सिंचाई के समय प्रयोग करें।

- ❖ इस समय गन्ने की कटाई करने पर पेड़ी की फसल में अन्तःसस्य के रूप में मूँग/उर्द/लोबिया इत्यादि बोना अच्छा होगा।

**सूरजमुखी**

- ❖ सूरजमुखी की बोआई 15 मार्च तक पूरा कर लें।
- ❖ सूरजमुखी की फसल में बोआई के 15–20 दिन बाद फालतू पौधों को निकाल कर पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंमी कर लें और तब सिंचाई करें।
- ❖ पहली सिंचाई के बाद आमतौर पर 10–15 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिये।
- ❖ सूरजमुखी में 25–30 दिन की अवस्था पर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें। यदि आलू की खुदाई के बाद बोआई की गई हो तो 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग पर्याप्त होगी।

**उर्द/मूँग**

- ❖ बसन्त ऋतु की मूँग व उर्द की बोआई के लिये यह माह अच्छा है। इन फसलों की बोआई गन्ना, आलू तथा राई की कटाई के बाद की जा सकती है।
- ❖ उर्द की टा–9, आजाद–1,उत्तरा, शेखर, नरेन्द्र उर्द– 1, पन्त यू. 19,पन्त यू. 30,पन्त यू. 35 तथा मूँग की पन्त मूँग–1, पन्त मूँग–2, पन्त मूँग–3, पन्त मूँग–4,नरेन्द्र मूँग–1, टा.44, पी.डी.एम. 54, पी.डी.एम. 11, पूसा विशाल, पूसा 9531, पूसा रत्ना, मालवीय जागृति, मालवीय जनप्रिया एवं मालवीय जन कल्याणी अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- ❖ इस समय उर्द व मूँग के लिये प्रति हेक्टेयर 25–30 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ उर्द की बोआई 25 सेंमी दूर कतारों में तथा मूँग की बोआई 30 सेंमी दूर कतारों में करें।
- ❖ उर्द व मूँग की फसलों में बोआई के समय 100 किग्रा प्रति हेक्टेयर डी.ए.पी. उर्वरक प्रयोग करें।

**चारे की फसल**

- ❖ बरसीम में इस माह 10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई अवश्य करें।
- ❖ जई की फसल में दूसरे तथा अन्तिम कटाई तब करें जब 50 प्रतिशत फसल में फूल आ जाये।
- ❖ गर्मी में चारा उपलब्ध कराने के लिये इस समय मक्का, लोबिया तथा चरी की कुछ खास किस्मों की बोआई के लिये अच्छा समय है।
- ❖ मक्का और लोबिया मिलाकर बोना अच्छा है।

- हरे चारे के लिये मक्का का गंगा–2, पूसा कम्पोजिट–3, विजय और अफ्रीकन टाल तथा लोबिया की रसियन जाइन्ट, यू.पी.सी. 5286, यू.पी.सी. 8705, यू.पी.सी. 9202, यू.पी.सी.5286, यू.पी.सी. 5287 अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- चरी की वह प्रजातियाँ, जिनसे कई कटाई प्राप्त होती हैं जैसे– एम.पी. चरी, पूसा चरी 23 व पायनियर की संकर किस्में उपयुक्त हैं।
- प्रति हेक्टेयर मक्का के लिये 40 किग्रा, लोबिया के लिये 35 किग्रा तथा चरी के लिये 20–25 किग्रा बीज पर्याप्त होगा।
- मक्का की बोआई 25–30 सेंमी, लोबिया व बहुकटाई वाली चरी की बोआई 30–35 सेंमी दूर कतारों में करें।
- बोआई के समय चारे की फसलों में प्रति हेक्टेयर 60 किग्रा नाइट्रोजन (132 किग्रा यूरिया) तथा आवश्यकतानुसार फास्फोरस डालें।
- बहुकटाई वाली चरी में प्रति हेक्टेयर 30किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) पहली कटाई पर दें। इसके पश्चात हर कटाई पर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) दें।
- हरे चारे की मक्का में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) बोआई के 30 दिन बाद डालें।

**सब्जियों की खेती**

- टमाटर की ग्रीष्मकालीन फसल की उन्नत/संकर किस्मों में रोपाई के 50 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की दूसरी टाप ड्रेसिंग तथा संकर टमाटर में रोपाई के 65 दिन बाद 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की तीसरी टाप ड्रेसिंग कर दें।
- बैंगन तथा टमाटर में फल छेदक कीट के नियन्त्रण के लिये क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 1.5 लीटर 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- जायद मिर्च की रोपाई हेतु खेत की अन्तिम जुताई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (77–88 किग्रा यूरिया), 40–60 किग्रा फास्फोरस (250–375 किग्रा एस.एस.पी.) व 40–50 किग्रा पोटाश भूमि में मिला दें और रोपाई 45–60×30 सेंमी की दूरी पर करें।
- ग्रीष्मकालीन बैंगन में रोपाई के समय प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया), 50 किग्रा फास्फोरस (312 किग्रा एस.एस.पी. व 50 किग्रा पोटाश (85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करना चाहिये तथा रोपाई 75–90×60 सेंमी की दूरी पर करें।
- वर्षाकालीन बैंगन के लिये नर्सरी में बीज की बोआई कर दें।

- ग्रीष्मकालीन सब्जियों–लोबिया, भिण्डी, चौलाई, लौकी, खीरा, खरबूजा, तरबूज, चिकनी तोरी, करेला, आरा तोरी, कुम्हड़ा, टिण्डी, ककड़ी व चप्पन कद्दू की बोआई यदि न हुई हो तो पूरी कर लें।
- ग्रीष्मकालीन सब्जियों, जिनकी बोआई फरवरी माह में कर दी गयी थी, की 7 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें तथा आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें। पत्ती खाने वाले कीटों से बचाने के लिये डाईक्लोरोवास एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। या कार्बरिल 0.2 प्रतिशत धूल का बुरकाव करें।
- यदि पिछले माह भिण्डी की बोआई नहीं की गयी है तो माह के प्रथम सप्ताह तक पूरी कर लें।
- फरवरी में बोई जाने वाली भिण्डी में बोआई के 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (76–88 किग्रा यूरिया) की प्रथम व 45 दिन बाद इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग करें।
- लोबिया की बोआई इस माह में कर लें।
- यदि फरवरी में लोबिया की गई हो तो बोआई के 30–35 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।
- प्याज में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें और रोपाई के 45 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 72 किग्रा यूरिया की दूसरी टाप ड्रेसिंग कर दें।
- प्याज की फसल को पर्पिल ब्लाच से बचाने के लिये 0.2 प्रतिशत मैंकोजेब और यदि थ्रिप्स कीट लगे हो तो 1.5 मिलीलीटर नुआक्रान या 0.5 मिलीलीटर साइपरमेथ्रिन प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- लहसुन की फसल में निराई–गुड़ाई व सिंचाई करें।

**फलों की खेती**

- नींबू में यदि फरवरी में उर्वरक न दिया गया हो तो उसे दे दें।
- अमरूद के नये पौधों की रोपाई की जा सकती है।
- अमरूद, आँवला, आम,कटहल, पपीता व लीची के नवरोपित पौधों की सिंचाई करें।
- आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफास 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में या डाईमेथोएट 1.6 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में तथा खर्रा रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) के नियन्त्रण हेतु कैराथेन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर के घोल का छिड़काव करें। काला सड़न या आन्तरिक सड़न के नियन्त्रण के लिये बोरैक्स 6 ग्राम 1 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करे। उपरोक्त तीनों रोगों के विरूद्ध उपयुक्त रसायनों का एक साथ मिलाकर स्प्रे किया जा सकता है।

- ❖ अमरूद में उकठा रोग के नियन्त्रण के लिये 20–30 ग्राम बाविस्टीन 10–15 लीटर पानी में मिलाकर प्रति पौधा जड़ों में प्रयोग करें। साथ ही 15 ग्राम जिंक सल्फेट व 1 मिलीलीटर मेटासिस्टाक्स एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ केला में नाइट्रोजन की 25 ग्राम (55 ग्राम यूरिया) मात्रा पौधे से 40–50 सेंमी दूर गोलाई में डालकर चारो तरफ गुड़ाई कर मिट्टी में मिला दें तथा सिंचाई कर दें।
- ❖ बेर में फल मक्खी की रोकथाम के लिये मैलाथियान 50 ई.सी. 200 मिलीलीटर तथा दो किग्रा गुड़ 200 लीटर पानी में घोलकर एक सप्ताह के अन्तर पर दो छिड़काव करें
- ❖ आँवला के पुराने बागों की हल्की जुताई–गुड़ाई करना आवश्यक है।
- ❖ अंगूर की मुख्य शाखा से अनावश्यक पत्तियों को तोड़ दें तथा लता को जाल पर व्यवस्थित कर दें।
- ❖ अंगूर के फलों का आकार व वजन बढ़ाने के लिये 50 प्रतिशत से अधिक फूल खिलने की अवस्था पर 30–40 मिलीग्राम जिब्रेलिक एसिड प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

**पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे**

- ❖ गुलाब में निराई–गुड़ाई व सप्ताह में एक बार सिंचाई करें।
- ❖ रजनीगंधा के बल्बों की रोपाई पिछले माह तैयारी की गई क्यारियों में 30×20 सेंमी की दूरी पर कर दें।
- ❖ यदि आप ग्लैडियोलस से कन्द लेना चाहें तो पौधे को भूमि से 15–20 सेंमी ऊपर से काटकर छोड़ दें और सिंचाई करें। पत्तियों जब पीली पड़ने लगें तो सिंचाई बन्द कर दें।
- ❖ गर्मी वाले मौसमी फूलों जैसे पोर्चुलाका, जीनिया, सनफ्लावर, कोचिया, नारंगी कासमास, गोम्फ्रीना, सेलोसिया व बालसम के बीजों को एक मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बाई की क्यारियों बनाकर बीज की बोआई कर दें।
- ❖ बीज को नर्सरी में बोआई के बाद सूखी घास या पुआल से ढक कर हल्की सिंचाई कर दें।
- ❖ मेंथा में 10–12 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा प्रति हेक्टेयर 40–50 किग्रा नाइट्रोजन (88–110 किग्रा यूरिया) की पहली टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ सिंचाई की समुचित व्यवस्था होने पर नींबू घास (लेमन ग्रास) व जावा घास (सिट्रोनेला) की रोपाई मार्च माह में की जा सकती है।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- ❖ पशुशाला की सफाई व पुताई करायें।
- ❖ बधियाकरण करायें।

- ❖ यदि गाय का कृत्रिम गर्भधान कराया गया हो तो दो माह के अन्दर परीक्षण करा लें।
- ❖ गर्भित गाय के भोजन में दाना की मात्रा बढ़ा दें।
- ❖ अगोले के साथ बरसीम का हरा चारा मिलाकर पशुओं को खिलायें।
- ❖ पशुओं के पेट में कीड़ो की रोकथाम के लिये कृमिनाशक दवा देने का सर्वोत्तम समय है।

### मुर्गीपालन

- ❖ कम अण्डे देने वाली मुर्गियों की छटनी (कलिंग) करें।
- ❖ मुर्गियों के पेट में कीड़ो की रोकथाम (डिवर्मिंग) के लिये दवा दें।
- ❖ परजीवियों जैसे जुएं की रोकथाम के लिये मैलाथियान कीटनाशक तथा राख का आधा–आधा भाग मिलाकर मुर्गियों के पंख पर रगड़ें।

# अप्रैल

## फसलोत्पादन

**गेहूँ**

- ❖ समय से बोई गई गेहूँ की फसल पककर तैयार होने को है। उसकी समय से कटाई–मड़ाई का प्रबन्ध कर लें। अन्यथा कभी–कभी वर्षा या ओला गिरने से भारी नुकसान हो सकता है।
- ❖ गेहूँ की जो फसल देर से बोई गई हो उसमें हल्की अन्तिम सिंचाई (5 सेंमी) दाना भरते समय कर दें। ध्यान रखें, सिंचाई के समय हवा न चली रही हो और मौसम शान्त हो।
- ❖ फसल काटने से पहले खरपतवार या गेहूँ की अन्य प्रजातियों की बालियों को निकाल देना चाहिये, जिससे मड़ाई के समय इनके बीज गेहूँ के बीज में न मिलने पायें।

**जौ/चना/मटर/सरसों/मसूर**

- ❖ जौ, चना, मटर, सरसों व मसूर आदि की कटाई व मड़ाई पूरी कर लें।

**सूरजमुखी**

- ❖ कमजोर या रोगी पौधों को निकालकर पौधों की आपस की दूरी पर 20 सेंमी कर दें।
- ❖ पहली सिंचाई बोआई के 15–20 दिन बाद करके पुनः 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।
- ❖ दूसरी सिंचाई के समय मिट्टी चढ़ाने से पौधों के गिरने का डर कम रहता है।
- ❖ बोआई के 25–30 दिन बाद 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें। यदि आलू की फसल की खुदाई के बाद सूरजमुखी बोई गई हो तो 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) की ही टाप ड्रेसिंग करें।

- ❖ सूरजमुखी में हरे फुदके पत्तियों से रस चूसकर हानि पहुँचात हैं। इनके नियन्त्रण के लिये प्रति हेक्टेयर मिथाइल ओडिमेटान 25 ई.सी. 1.0 लीटर या इण्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.25 लीटर का छिड़काव करें।

**उर्द/मूँग**

- ❖ उर्द की बोआई का समय अब निकल गया है। परन्तु मूँग की बोआई 10 अप्रैल तक व इनकी प्रजातियाँ पूसा विशाल, पूसा 9531, 20 अप्रैल तक बोई जा सकती हैं।
- ❖ मूँग की बोआई के लिये प्रति हेक्टेयर 25–30 किग्रा बीज आवश्यक होगा।
- ❖ मूँग की बोआई 30 सेंमी दूर कतारों में करें तथा बोआई के समय 100 किग्रा प्रति हेक्टेयर डी.ए.पी. उर्वरक प्रयोग करें।
- ❖ जो फसल पहले बोई गई है उसमे बोआई के 25–30 दिन बाद पहली सिंचाई करें तथा ओट आने पर निराई–गुड़ाई कर दें।
- ❖ उर्द/मूँग की फसल में पत्ती खाने वाले कीटों की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 1.25 लीटर मैलाथियान 50 ई.सी. दवा को 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**शरदकालीन/बसन्तकालीन गन्ना**

- ❖ आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- ❖ बहुत से किसान गेहूँ की फसल काटने के बाद गन्ने की बोआई करते हैं। अतः उन खेतों में पलेवा करने के बाद बोआई करें। देर से बोआई के लिए सी.ओ 0118 अच्छी प्रजाति है।
- ❖ जिस खेत से बोआई के लिये गन्ना लेना है, उसमें बोआई से 5–7 दिन पूर्व सिंचाई कर दें।
- ❖ बोआई 75 सेंमी दूर बनी 10 सेंमी गहरी कूड़ों में करना अच्छा होगा। कूंड़ों में भी गन्ने के टुकड़ों की संख्या बढ़ा दें।
- ❖ बोआई से पूर्व गन्ने को 24 घण्टे तक पानी में भिगो दें और पुनः 0.25 प्रतिशत एरीटन (6 प्रतिशत) अथवा 0.5 प्रतिशत एगलाल (3 प्रतिशत) के घोल में तीन आँख वाले टुकड़ो को पाँच मिनट तक डुबोकर उपचारित करने के बाद बोआई करें।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 60–75 किग्रा नाइट्रोजन (132–165 किग्रा यूरिया), 80 किग्रा फास्फोरस (500 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट), व 60 किग्रा पोटाश (100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रयोग करना आवश्यक होगा।
- ❖ गन्ने की दो कतारों के मध्य इस समय मूँग की एक कतार बोई जा सकती है।

**चारे की फसल**

- बरसीम की फसल में 10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।
- जिस खेत से बरसीम का बीज लेना है, उसमें मार्च के प्रथम सप्ताह के बाद कटाई बन्द कर बीज के लिये छोड़ दें।
- बीज वाले बरसीम के खेत में हल्की सिंचाई करें अन्यथा बानस्पतिक वृद्धि अधिक होगी तथा बीज उत्पादन घटेगा।
- गर्मी में चारे के लिये मक्का, लोबिया व कई कटान वाली चरी की बोआई अभी भी की जा सकती है।
- मक्का व लोबिया मिलाकर बोने से अच्छी गुणवत्ता का चारा प्राप्त होता है।
- हरे चारे की मक्का में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) बोआई के 30 दिन बाद डालें।
- बहुकटाई वाली चरी में बोआई के एक माह बाद प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) तथा इतनी ही मात्रा पहली कटाई पर दें। पुनः हर कटाई के बाद 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करते रहें।
- किसान अपने खेतों से मिट्टी के नमुने लेकर मृदा परीक्षण करायें।

**सब्जियों की खेती**

- पूर्व में रोपी गई मिर्च में रोपाई के 25 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (76–88 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग व इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग रोपाई के 45 दिनों बाद करें।
- ग्रीष्मकालीन बैंगन में रोपाई के 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया) की पहली टाप ड्रेसिंग व इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग रोपाई के 45 दिन बाद करें।
- वर्षाकालीन बैंगन की नर्सरी यदि तैयार हो तो उसकी रोपाई 75–90×60 सेंमी की दूरी पर, जहाँ तक सम्भव हो, रोपाई शाम के समय करें तथा रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई कर दें।
- वर्षाकालीन बैंगन की फसल के लिये नर्सरी में बीज की बोआई इस माह भी कर सकते हैं।
- नर्सरी तैयार करने के लिये लो टनेल पाली हाउस (एग्रोनेट युक्त) का प्रयोग करने से अच्छी गुणवत्ता की पौध तैयार होगी।
- टमाटर की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। फलों में छेद करने वाले कीट से बचाने के लिये फल तोड़ने के बाद मैलाथियान 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें। छिडकाव के 3–4 दिन बाद तक फल की तुड़ाई न करें।
- बैंगन में तनाछेदक कीट से बचाव के लिये नीमगिरी 4 प्रतिशत का छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर करने से अच्छा परिणाम मिलता है।

- ❖ मार्सल (कार्बोसल्फान 20 ई.सी.) 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- ❖ भिण्डी की फसल में नाइट्रोजन की प्रति हेक्टेयर 35–40 किग्रा मात्रा (76–88 किग्रा यूरिया) की पहली टाप ड्रेसिंग बोआई के 30 दिन बाद व शेष एक तिहाई 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (76–88 किग्रा यूरिया) की दूसरी टाप ड्रेसिंग बोआई के 45–50 दिन बाद करें।
- ❖ भिण्डी/लोबिया की फसल में पत्ती खाने वाले कीट से बचाने के लिये डाईमेथोएट 30 ई.सी. 0.1 प्रतिशत (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) कर छिड़काव करें।
- ❖ भिण्डी की फसल में फलों की तुड़ाई प्रत्येक तीसरे दिन करें अन्यथा तुड़ाई नियमित न करने पर फल बड़े हो जाते हैं तथा संख्या में कम प्राप्त होते हैं।
- ❖ लहसुन व प्याज की खुदाई करें। खुदाई के 10–12 दिन बाद सिंचाई कर दें।
- ❖ कद्दूवर्गीय फसलों में 4–5 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें, पौधों के कमजोर होने पर आवश्यकतानुसार यूरिया की टाप ड्रेसिंग कर दें। ध्यान रखें कि यूरिया पत्तियों पर न गिरे अन्यथा फसल जल जायेगी।
- ❖ लाल भृंग कीट की रोकथाम के लिये सुबह ओस पड़ने के समय राख का बुरकाव करने से कीट पौधों पर नहीं बैठते हैं।
- ❖ इस कीट का अधिक प्रकोप होने पर राख में मैलाथियान चूर्ण 5 प्रतिशत, 25 किग्रा मात्रा मिलाकर सुबह पौधों पर बुरकना चाहिये। या 0.2 प्रतिशत सेविन (2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- ❖ सूरन की बोआई पूरे माह तथा अदरक व हल्दी की बोआई माह के दूसर पखवाड़े से शुरू की जा सकती है।
- ❖ प्रति हेक्टेयर अदरक की बोआई के लिये लगभग 18 कुन्टल, हल्दी के लिये 15–20 कुन्टल व सूरन के लिये 75 कुन्तल बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ बोआई से पूर्व हल्दी व अदरक के बीज को 0.3 प्रतिशत कापर ऑक्सीक्लोराइड (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) के घोल में उपचारित कर लें।
- ❖ बोआई से पूर्व सूरन के बीज को 2 प्रतिशत तूतिया या 0.2 प्रतिशत बावेस्टीन या गोबर के घोल में डुबा दें। पुनः उसे साये में सूखा कर बोआई करनी चाहिये।
- ❖ हल्दी, अदरक व सूरन की बोआई के बाद खेत को सूखी पुवाल, घास–फूस या पत्ती से ढक दें। इससे खेत में खरपतवार का जमाव नहीं होता, नमी संरक्षित रहने से फसल का जमाव भी अच्छा होता है तथा साथ ही इनके सड़ने से खेत जीवांश पदार्थ की मात्रा भी बढ़ती है।

## फलों की खेती

- इस माह आम के बागों में एक वर्ष के वृक्ष के लिये 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फास्फोरस व 50 ग्राम पोटाश (110 ग्राम यूरिया, 156 ग्राम एस.एस.पी. व 85 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) जो क्रमशः बढ़ाकर 10 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिये प्रति वृक्ष 500 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फास्फेट तथा 500 ग्राम पोटाश (1100 ग्राम यूरिया, 1560 ग्राम एस.एस.पी. व 850 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- आम के गुम्मा रोग (मालफारमेशन) से ग्रस्त पुष्प मंजरियों की 30–40 सेंमी की लम्बाई में कटाई कर दें।
- आम के फलों को गिरने से बचाने के लिये नेफ्थलीन एसिटिक एसिड 20 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी या प्लैनोफिक्स 5 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- आम में ऊतक क्षय रोग के नियंत्रण के लिये 0.8 प्रतिशत बोरैक्स (8 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- लीची के बागों की आवश्यकता सिंचाई करते रहें। लीची में फ्रूट बोरर की रोकथाम हेतु डाईक्लोरोवास आधा मिलीलीटर प्रति लीटर पानी (0.05 प्रतिशत) या 2 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी (0.04 प्रतिशत) में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- अंगूर में एक वर्ष के पौधे के लिये 50 ग्राम नाइट्रोजन (110 ग्राम यूरिया) व 40 ग्राम पोटाश (70 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश) तथा क्रमशः बढ़ाकर 5 वर्ष या इससे अधिक उम्र के पौधे में 250 ग्राम नाइट्रोजन (550 ग्राम यूरिया) व 220 ग्राम पोटाश (700 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- केला में प्रति पौधा 25 ग्राम नाइट्रोजन (55 ग्राम यूरिया), 25 ग्राम फास्फोरस (155 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट) व 120 ग्राम पोटाश (200 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) भूमि में गुड़ाई कर मिला दें।
- नींबूवर्गीय वृक्षों में सूक्ष्म तत्वों का छिड़काव करें। फलों को फटने से बचाने के लिये 100 मिलीग्राम जिबरेलिक एसिड प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- आम, अमरूद, नींबू, अंगूर, बेर तथा पपीता की सिंचाई करें।

**पुष्प व सगन्ध पौधे**

- गुलाब में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं गुड़ाई करें तथा बेकार फुनगियों को तोड़ दें।
- ग्लैडियोलस के कन्दों की खुदाई से 15 दिन पहले सिंचाई बन्द कर दें और स्पाइक काटने के 40 दिन बाद घनकन्दों (कार्म) की खुदाई करें। कार्म को 0.2 प्रतिशत मैंकोजेब पाउडर से शुष्क उपचारित करके शीतगृह में भण्डारण कर दें, अन्यथा कन्द सड़ जायेंगे।
- रजनीगंधा में एक सप्ताह के अन्तराल पर सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई करें।

- ❖ गर्मी के फूलों जैसे जीनिया, पोर्चुलाका व कोचिया के पौधों की सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई कर दें।
- ❖ मेंथा में 10–12 दिन के अन्तर पर सिंचाई तथा तेल निकालने हेतु प्रथम कटाई करें।

### पशुपालन/दुग्ध विकास

- ❖ पशुओं में खुरपका–मुँहपका रोग से बचाव के लिये टीका लगवायें।
- ❖ पशुओं के लिये बदलते हुये मौसम के अनुसार सुपाच्य तथा पौष्टिक चारा की व्यवस्था करें।
- ❖ गाय तथा भैंस की संतति को कृमिनाशक दवापान करवायें तथा सभी पशुधन में वाह्य कृमिनाशी उपयों की व्यवस्था करायें।
- ❖ गायों में समय से कृत्रिम गर्भाधान सम्पादित करवायें

### मुर्गीपालन

- ❖ जो मुर्गियाँ कम अण्डे दे रही हों, उनकी छटनी कर दें।
- ❖ मुर्गियों में डिवर्मिंग (पेट के कीड़ो के लिये दवा) करें।
- ❖ बदलते मौसम में मुर्गियों को प्रकाश, स्वच्छ जल तथा सन्तुलित आहार की व्यवस्था करवायें।
- ❖ आर.डी. तथा फाउल पाक्स का टीकाकरण ससमय करायें।

# मई

## फसलोत्पादन

**गेहूँ**

- ❖ गेहूँ में मड़ाई का कार्य अति शीघ्र पूरा कर लें।
- ❖ खलिहान में रखे अनाज की सुरक्षा के लिये ध्यान दें कि खलिहान के ऊपर बिजली का तार न हो और बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि का प्रयोग खलिहान में कदापि न करें।
- ❖ मडाई के समय ध्यान रखें कि थ्रेसर ठीक से काम कर रहा हो और गेहूँ का लाक अच्छी तरह सूखा हो।
- ❖ थ्रेसर चलाते समय सावधानी बरतें, पट्टे को मजबूती से जोड़ें।
- ❖ थ्रेसर में मड़ाई के लिये फसल सावधानी से लगायें। थ्रेसर के मुँह तक पहुँचाने के लिये चौकी या तखत का प्रयोग करें।
- ❖ भण्डारण के लिये गेहूँ को कड़ी धूप में इतना सुखाना चाहिये कि उसमें नमी की मात्रा 8–10 प्रतिशत से अधिक न रहे।
- ❖ भण्डारण से पूर्व कुठ्ले या भण्डारगृह को कीटनाशी से विसंक्रमित कर लें।

- ❖ विसंक्रमण के लिये मैलाथियान 0.3 प्रतिशत घोल बनाकर गोदाम के अन्दर छिड़कना चाहिये।
- ❖ जहाँ तक सम्भव हो नये बोरे प्रयोग में लाने चाहिये। यदि पुराने बोरे प्रयोग में लाना हो तो बोरों को 15 मिनट तक उबलते पानी में रखने के बाद अच्छी तरह सुखाकर प्रयोग करें।
- ❖ यदि अनाज को बोरियों में भरकर रखना हो तो नीचे पर्याप्त मात्रा में भूसे व नीम की सूखी पत्ती की तह बिछा दें तथा बोरे को दीवार से 50 सेंमी दूर रखें।
- ❖ अनाज को यदि 100:1 के अनुपात में नीम के बीज के पाउडर के साथ मिलाकर रखें तो कीटों का प्रकोप नहीं होता।

**सूरजमुखी**

- ❖ सूरजमुखी की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई व निराई–गुड़ाई करें। इसके साथ ही पौधों पर 15–20 सेंमी मिट्टी भी चढ़ा दें।
- ❖ सूरजमुखी में हरे फुदके सूंडी या तम्बाकू की सूंड़ी के नियंत्रण के लिये प्रति हेक्टेयर मिथाइल ओडिमेटान 25 ई.सी. 1.0 लीटर या इण्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.25 लीटर दवा 800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

**मूँग/उर्द/लोबिया**

- ❖ गर्मी में बोई मूँग, उर्द, और लोबिया की फसल में 12–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें
- ❖ इन फसलों में पत्ती खाने वाले कीट की रोकथाम के लिये इण्डोसल्फान 3.5 ई.सी. दवा की 1.25 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ मूँग और उर्द में पत्तियों का धब्बा रोग की रोकथाम के लिये कापर आक्सीक्लोराइड का 3.0 किग्रा का दस दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव या कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम का एक छिड़काव पर्याप्त होता है।

**ग्रीष्मकालीन मूँगफली**

- ❖ ग्रीष्मकालीन मूँगफली में आवश्यक नमी बनाये रखने के लिये तीसरी सिंचाई बोआई के 50–55 बाद खूटियाँ बनते समय तथा चौथी सिंचाई बोआई के 70–75 दिन बाद फलियों में दाना भरते समय करनी चाहिये।
- ❖ खूटियाँ बनते समय निराई–गुड़ाई न करें।
- ❖ पीला मोजैक रोग की रोकथाम के लिये मेटासिस्टाक्स या रोगोर दवा की 1.0 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

**गन्ना**

- ❖ बसन्त ऋतु के गन्ने में 20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें और ओट आने पर गुड़ाई करें।
- ❖ इस ऋतु में बोई गई गन्ने की फसल में बोआई के लगभग 3 माह बाद प्रति हेक्टेयर 60–75 किग्रा नाइट्रोजन (130–165 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रसिंग करके सिंचाई करें।
- ❖ यदि गेहूँ काटने के बाद गन्ने की बोआई करनी हो तो पलेवा करके गन्ना बोयें।
- ❖ जिस खेत से गन्ने का बीज लेना है, उसमें कुछ दिन पूर्व सिंचाई कर दें और बोआई से पूर्व भी गन्ने के टुकड़ो को 24 घण्टे पानी में भिगोकर बोआई करने से अंकुरण अच्छा होता हैं।
- ❖ इस समय बोआई के लिये कतार से कतार की दूरी घटाकर 60–65 सेंमी कर लें और कूंड़ के अन्दर भी टुकड़ों की संख्या बढ़ा दें।
- ❖ गन्ने की फसल को अंकुर बेधक व दीमक से बचाने के लिये कूंड़ ढकने से पूर्व क्लोरपायरीफॉस की 3.0 लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर बोये गये टुकड़ों के ऊपर छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने की फसल को इस समय अगोला बेधक (टाप बोरर) व जड़ बेधक से काफी नुकसान होता है।
- ❖ अगोला बेधक की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा कार्बोफ्यूरान 3 जी डालकर फसल में सिंचाई कर दें अथवा मोनोक्रोटोफास 40 ई.सी. की 1.5 लीटर दवा 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने की पेड़ी से अच्छी उपज लेने के लिये प्रति हेक्टेयर 75 किग्रा नाइट्रोजन (165 किग्रा यूरिया), पहली फसल काटने के बाद तथा 75 किग्रा (165 किग्रा यूरिया) दूसरी या तीसरी सिंचाई के समय या फसल काटने के 60 दिन पर प्रयोग करना चाहिये।

**चारे की फसलें**

- ❖ चारे के लिये बोई गई फसल मक्का, लोबिया व चरी में 12–15 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिये।
- ❖ बोआई के 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर मक्का में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) व बहुकटान वाली ज्वार में 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ बहुकटान वाली ज्वार में प्रथम कटान पर प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) और उसके बाद प्रत्येक कटाई पर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।

**हरी खाद की फसलें**

- ❖ हरी खाद के लिये ढैंचा या सनई की बोआई भूमि की उर्वरता बढ़ाने के लिये बहुत ही उपयोगी है।
- ❖ इन फसलों से प्रति हेक्टेयर 50–60 किग्रा नाइट्रोजन प्राप्त होती है।
- ❖ ढैंचा व सनई के लिये प्रति हेक्टेयर 35–40 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ बोआई से पूर्व बीज को 12 घण्टे पानी में भिगोने के बाद बोआई करने पर जमाव जल्दी होता है।
- ❖ बोआई सुबह या शाम को करनी चाहिये जिससे भीगे बीजों पर धूप का प्रभाव न पड़े।
- ❖ हरी खाद की फसलें 45–50 दिन में पलटने योग्य हो जाती हैं। अतः रोपाई के समय को ध्यान में रखते हुये बोआई करें।

**मृदा परीक्षण एवं भूमि का समतलीकरण**

- ❖ भूमि में पोषक तत्वों की कमी जानने के लिये मृदा परीक्षण करवा लें।
- ❖ अपने हर खेत से लगभग 15 स्थानों से 15 सेंमी की गहराई तक खुर्पी की सहायता से नमूने लें।
- ❖ मिट्टी का नमूना खेत के किनारे या किसी खाद वाले स्थान या छायादार स्थान से न लें।
- ❖ एक खेत से प्राप्त मिट्टी के नमूनों को आपस में मिलाकर उसमें से लगभग 500 ग्राम भार एक थैले में भरकर पूरे विवरण के साथ मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में भेजें।
- ❖ मृदा परीक्षण के बाद ली जाने वाली फसल का नाम अवश्य भेजें, जिससे उस फसल के लिये उर्वरक की संस्तुति प्राप्त हो सके।

**गर्मी की जुताई**

- ❖ रबी की फसल की कटाई के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से गर्मी की जुताई करना लाभदायक होगा।
- ❖ गर्मी की जुताई से खरपतवार की संख्या में कमी होती है, साथ ही हानिकारक कीड़े भी नष्ट हो जाते हैं और भूमि की पानी सोखने व रोकने की क्षमता भी बढ़ हो जाती हैं।
- ❖ गर्मी की जुताई करने से खरीफ की बोआई के लिये खेत की तैयारी आसान हो जाती है।

**धान**

- ❖ धान की देर से पकने वाली प्रजातियों की नर्सरी माह के अन्तिम सप्ताह से डाली जा सकती है।
- ❖ धान की मध्यम आकार की किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 35 किग्रा, मोटे धान के लिये 40 किग्रा तथा महीन किस्मों के लिये 30 किग्रा बीज आवश्यक होता है।

- ❖ पौध तैयार करने के लिये 1.25 मीटर चौड़ी व 8 मीटर लम्बी क्यारियाँ बना लेते हैं तथा प्रति क्यारी (10 वर्गमीटर) में 225 ग्राम यूरिया तथा 500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 500 ग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करते हैं।
- ❖ प्रति किलोग्राम बीज को 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा या 3 ग्राम थायरम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम से उपचारित कर लेना जरूरी है।
- ❖ बीज को पानी में 24 घण्टे भिगाने के बाद पुनः पानी से निकालकर 36–48 घण्टे ढेर बनाकर रख दें और अंकुरण शुरू होने पर ही क्यारियों में बोआई करें।

**सब्जियों की खेती**

- ❖ यदि लहसुन व प्याज की खुदाई न हुई तो फसल में सिंचाई बन्द कर दें और कन्द को सूखने दें। सूखे कन्द की खुदाई करें।
- ❖ लौकी वर्ग की सब्जियों में सिंचाई करें।
- ❖ मार्च में रोपे गये टमाटर, बैंगन व मिर्च में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें तथा नाइट्रोजन की शेष एक तिहाई मात्रा (टमाटर व बैंगन में 50 किग्रा व मिर्च में 35–40 किग्रा नाइट्रोजन यानि टमाटर व बैंगन में 110 किग्रा यूरिया, मिर्च में 77–88 किग्रा यूरिया) की दूसरी व अंतिम टाप ड्रेसिंग रोपाई के 45–50 दिन बाद कर दें।
- ❖ भिण्डी/बैंगन को फली छेदक सूंड़ी से बचाने के लिये फल तोड़ने के बाद क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 1.5 लीटर 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।
- ❖ लौकी वर्ग की सब्जियों में फल मक्खी के नियन्त्रण के लिये प्वाइजन वेट का प्रयोग करना चाहिये। इसके लिये लगभग एक लीटर के चौड़े मुँह वाले डिब्बे में एक लीटर पानी में मिथाइलयूजोनेल 1.5 मिलीलीटर व डाइक्लोरोवास 2 मिलीलीटर का प्रयोग होता है। यह प्वाइजन वेट 4–6 स्थानों पर रखना चाहिये और प्वाइजन वेट को 3–4 दिन के अन्तराल पर बदलते रहना चाहिये।
- ❖ हल्दी की कस्तूरी पास्पु, अमलापुरम, मधुकर, कृष्णा, सुगना, राजेन्द्र, सोनिया व अदरक की सुप्रभा, सुरूचि, सुरभि व हिमगिरी उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।
- ❖ अदरक के लिये प्रति हेक्टेयर 18 कुन्तल तथा हल्दी के लिये 15–20 कुन्तल प्रकन्दों की आवश्यकता होती है।
- ❖ अदरक व हल्दी में खेत की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर 200–250 कुन्तल गोबर की खाद या 75 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट प्रयोग करना चाहिये।
- ❖ हल्दी में कुल 120 किग्रा नाइट्रोजन, 80 किग्रा फास्फेट व 80 किग्रा पोटाश की आवश्यकता होती है। इसमें सम्पूर्ण फास्फोरस व पोटाश तथा 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया, 500 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट व 135 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) बोआई के समय प्रयोग करें।

- अदरक में नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फास्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा (नाइट्रोजन 50 किग्रा, फास्फोरस 50 किग्रा तथा पोटाश 100 किग्रा अर्थात् 110 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा एस.एस.पी. व 85 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश ) बोआई से पहले, अन्तिम जुताई के समय बिखेर कर मिला दें।
- अदरक की बोआई 30×20 सेंमी पर 4 सेंमी की गहराई में करनी चाहिये। बोआई से पूर्व 20–25 ग्राम के टुकड़ो को कापर आक्सीक्लोराइड के 0.3 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक उपचारि करें।
- हल्दी की बोआई 30–40×20–25 सेंमी पर 4–5 सेंमी की गहराई में उपरोक्त रसायन से उपचारित करने के बाद करनी चाहिये।
- सूरन की बोआई पूरी कर लें।
- बेबी कार्न की बोआई अप्रैल से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती हैं परन्तु मई का प्रथम सप्ताह सबसे उपयुक्त है।
- बेबी कार्न की वी.एल. बेबी कार्न 1, वी.एल.42,एम.ई.एच. 114, एम.ई.एच. 133, गोल्डन बेबी, माधुरी, हिमालय 129 व अर्ली कम्पोजिट अच्छी किस्में हैं।
- बेबी कार्न की बोआई 50×15 सेंमी पर करने हेतु प्रति हेक्टेयर 36–40 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 132 किग्रा यूरिया, 375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट व 67 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश प्रयोग करें।

**फलों की खेती**

- आम, अमरूद, पपीता, लीची, नींबू व बेर के बाग की सिंचाई करते रहें।
- आम में यदि उर्वरकों का प्रयोग न किया गया हो तो पिछले माह बताई गई मात्रा के अनुसार तुरन्त कर दें।
- अमरूद की नई बढ़वार, जिस पर फूल लग रहें हों, का 3/4 शीर्ष भाग काटकर निकाल दें। इससे बरसात की फसल तो कम हो जायेगी, परन्तु जाड़े की फसल में उतनी ही वृद्धि हो जायेगी।
- आम को ऊतक क्षय रोग से बचाने के लिये बोरैक्स 8 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- यदि नींबू में फटने की समस्या हो तो पोटैशियम सल्फेट के 4 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। गर्मियों में उचित समय पर सिंचाइ करें।
- रोपे गये केले में 25 ग्राम नाइट्रोजन (55 ग्राम यूरिया) पौधे से 40–50 सेंमी दूर गोलाई में डालकर, गुड़ाई करके मिट्टी में मिला दें तथा सिंचाई करें।
- केले की रोपाई के लिये 1.5 मीटर की दूरी पर 50×50 सेंमी के गड्डे बना लें।

- ❖ प्रत्येक गड्डे में 10–15 किग्रा गोबर की खाद/कम्पोस्ट, 10–15 ग्राम कार्बोफ्यूरान, 3 जी 50 ग्राम फास्फोरस (300 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट) तथा खेत के ऊपर की उर्वर मिट्टी मिलाकर भर दें।
- ❖ लीची को फटने से बचाने हेतु भूमि में सिंचाई कर पर्याप्त नमी बनाये रखें। फल विगलन रोग के रोकथाम के लिये फलों के पकने से 20–25 दिन पूर्व बावेस्टीन 0. 1 प्रतिशत (एक ग्राम दवा/लीटर पानी) का छिड़काव करें।

**पुष्प व सुगन्ध पौधे**

- ❖ गुलाब में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं गुड़ाई करें।
- ❖ रजनीगंधा में आवश्यकतानुसार एक सप्ताह के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिये।
- ❖ मेंथा में 40–50 किग्रा नाइट्रोजन (88–110 किग्रा यूरिया) की तीसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग करें।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- ❖ पशुओं को गर्मी तथा लू से बचायें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा पर्याप्त मात्रा में दें।
- ❖ पशुओं के लिये स्वच्छ पानी की पर्याप्त व्यवस्था करें तथा पशुओं को सुबह एवं सायं नहलावें।
- ❖ परजीवी का पशुओं में उपचार करायें।
- ❖ सभी पशुओं को गलाघोंटू तथा बी.क्यू. का टीका लगवायें।
- ❖ बांझपन की चिकित्सा तथा गर्भ परीक्षण करायें।

**मुर्गीपालन**

- ❖ मुर्गीखाने के आस–पास छायादार वृक्ष होना चाहिये।
- ❖ ऐस्वेट्स/टिन के छतों पर पेन्ट लगायें, जिससे मुर्गीखाने में ठंडक रहे।
- ❖ मुर्गीखाने में लगे पर्दो पर पानी के छीटें मारें जिससे ठंडक बनी रहे।
- ❖ मुर्गियों के लिये स्वच्छ जल उपलब्ध करायें।
- ❖ मुर्गियों के चारे में प्रोटीन की मात्रा 18 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत कर दें। इसके लिये मूँगफली की खली तथा मछली के चूरे की मात्रा बढ़ा दें।
- ❖ चेचक से बचाव के लिये मुर्गियों में टीके लगवायें।

# जून

## फसलोत्पादन

**धान**

- ❖ यदि मई के अन्तिम सप्ताह में धान की नर्सरी नहीं डाली हो तो जून के प्रथम पखवाड़े तक पूरा कर लें। जबकि सुगन्धित प्रजातियों की नर्सरी जून के तीसरे सप्ताह में डालनी चाहिये।
- ❖ मध्यम व देर से पकने वाली धान की किस्में हैं, पन्त–4, पन्त–10, सरजू–52, नरेन्द्र–359, पन्त धान–16 (सिंचित/वर्षाधीन क्षेत्र), जबकि टा0–3, पूसा बासमती–1, हरियाणा बासमती–1, पूसा सुगन्ध–2, पूसा सुगन्ध–3, पूसा सुगन्ध–5, पूसा सुगन्ध 15, यामिनी सुगन्धित तथा पन्त संकर धान–1 पन्त संकर धान–3 व नरेन्द्र संकर धान–2 व पूसा आर.एच.–10 प्रमुख संकर किस्में हैं।
- ❖ ऊसर धान–1, ऊसर धान–2, साकेत–4 तथा यामिनी ऊसर भूमि के लिये उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।
- ❖ यदि धान और गेहूँ की फसल के मध्य लाही या आलू की फसल लेना हो तो धान की शीघ्र पकने वाली किस्में जैसे– नरेन्द्र–97, रत्ना या गोविन्द ही बोयें।
- ❖ एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई के लिये 500–800 वर्ग मीटर नर्सरी क्षेत्र की आवश्यकता होगी।
- ❖ धान की महीन किस्मों की प्रति हेक्टेयर बीज दर 30 किग्रा, मध्यम के लिये 35 किग्रा, मोटे धान हेतु 40 किग्रा तथा ऊसर भूमि के लिये 60 किग्रा पर्याप्त होता है, जबकि संकर किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ पौध तैयार करने के लिये 1.25 मीटर चौड़ी व 8 मीटर लम्बी क्यारियाँ बना लेते हैं तथा प्रति क्यारी (10 वर्ग मीटर) 225 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 75 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 50 ग्राम जिंक सल्फेट मिलाते हैं।
- ❖ क्यारियों में अंकुरित हो रहे बीजों को ही बोयें।
- ❖ यदि नर्सरी में खैरा रोग दिखाई दे तो 10 वर्ग मीटर क्षेत्र में 20 ग्राम यूरिया,5ग्राम जिंक सल्फेट प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**मक्का**

- ❖ मक्का की बोआई 25 जून तक पूरी कर लें। यदि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो बोआई 15 जून तक कर लेनी चाहिये।
- ❖ संकर मक्का की गंगा–2, गंगा–5, आर.एच.एम. 1,आर.एच.एम. 2, के.एच 528, डी.एच.एम. 109, संकुल मक्का की पूसा संकुल 3 तरूण, नवीन कंचन. श्वेता तथा जौनपुरी सफेद व मेरठ पीली देशी प्रजातियाँ हैं।

- ❖ बोआई से पूर्व प्रति किग्रा बीज को 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा या 2.5 ग्राम थायरम से उपचारित कर लेना चाहिये।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस व 40 किग्रा पोटाश (88 किग्रा यूरिया, 375 किग्रा एस.एस.पी. व 68 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश ) का प्रयोग करें।
- ❖ संकर प्रजातियों के लिये प्रति हेक्टेयर 18–20 किग्रा व संकुल प्रजातियों के लिये 20–25 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ संकर व संकुल प्रजातियों को 60×20 सेंमी पर व देशी प्रजातियों की बोआई 45×20 सेंमी पर करें।

**ज्वार**

- ❖ ज्वार की बोआई जून के अन्तिम सप्ताह में करें।
- ❖ ज्वार के लिये प्रति हेक्टेयर 12–15 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ ज्वार की प्रमुख उन्नत किस्में हैं– मऊ टा–1, मऊ टा–2, वर्षा, सी.एस.बी.–13, सी. एस.बी.–15 तथा सी.एस.एच.–5, सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–14 व सी.एस.एच.–16 संकर किस्में हैं।

**अरहर**

- ❖ सिंचित दशा में अरहर की बोआई जून के प्रथम सप्ताह में, अन्यथा सिंचाई के अभाव में वर्षा प्रारम्भ होने पर ही करें।
- ❖ पूसा 992, प्रभात व यू.पी.ए.एस.–120 शीघ्र पकने वाली तथा बहार ,शरद, लक्ष्मी, पूसा 9, नरेन्द्र अरहर–1, विकास (एम.ए.–6), मालवीय चमत्कार (एम.ए.एल.–13) देर से पकने वाली अच्छी प्रजातियाँ हैं जबकि जी.टी.एच.–1 संकर अरहर है।
- ❖ प्रति हेक्टेयर क्षेत्र के लिये 12–15 किग्रा बीज आवश्यक होगा।
- ❖ अरहर का राइजोबियम कल्चर से उपचारित बीज 60–75×15–20 सेंमी की दूरी पर बनायें।
- ❖ बोने के समय प्रति हेक्टेयर 100 किग्रा डी.ए.पी. डालें।

**मूँगफली**

- ❖ मूँगफली की बोआई जून के दूसरे पखवाड़े में करें।
- ❖ मूँगफली की टा–64, कौशल गुच्छेदार तथा चन्द्रा व टा–28 फैलने वाली अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- ❖ मूँगफली में फैलने वाली प्रजातियों की 60–80 किग्रा बीज की मात्रा तथा गुच्छेदार प्रजातियों की 80–100 किग्रा मात्रा आवश्यक होगी।

**सोयाबीन**

- ❖ सोयाबीन की बोआई जून के दूसरे पखवाड़े से ही की जा सकती है।

❖ सोयाबीन के लिये प्रति हेक्टेयर 75 किग्रा बीज आवश्यक होता है।

**गन्ना**

❖ गन्ने की फसल में नाइट्रोजन की पूरी मात्रा इस माह तक पड़ जानी चाहिये।

❖ अगोला बेधक कीट की रोकथाम के लिये कार्बोफ्यूरान चूर्ण 3 जी 30 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बिखेरकर सिंचाई कर दें। यदि जड़ बेधक कीट की समस्या हो तो इण्डोसल्फान 35 ई.सी. की 1.0 लीटर दवा 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**सूरजमुखी/उर्द/मूँग**

❖ जायद में बोई गई सूरजमुखी व उर्द की कटाई मड़ाई का कार्य तथा मूँग की फलियों की तुड़ाई का कार्य 20 जून तक अवश्य पूरा कर लें।

**चारे की फसलें**

❖ बहुकटाई वाली चरी में कटाई के बाद प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) व पुनः हर कटाई के बाद 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।

❖ चारे के लिये ज्वार, लोबिया व बहुकटाई वाली चरी की बोआई कर दें। वर्षा न होने की दशा में पलेवा देकर बोआई की जा सकती है।

❖ लोबिया के लिये 35–40 किग्रा, ज्वार के लिये 40–45 किग्रा व बहुकटान वाली चरी के लिये 20–25 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होगा।

**गर्मी की जुताई व मेड़बन्दी**

❖ रबी की फसल काटने के बाद यदि गर्मी की जुताई न की हो तो इस कार्य को पूरा कर लें।

❖ वर्षा से पूर्व खेत में अच्छी मेड़बन्दी कर दें, जिससे खेत की मिट्टी न बहे तथा खेत वर्षा का पानी सोख सके।

## सब्जियों की खेती

❖ बैंगन, मिर्च, अगेती फूलगोभी की पौध बोने का समय है।

❖ पूसा क्रान्ति, पन्त सम्राट, पन्त ऋतुराज, आजाद क्रान्ति, नवकिरण बैंगन की, पन्त सी–1, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, एन.पी. 46ए, ए.आर.सी.एच. 226 मिर्च की व पन्त गोभी 1, पन्त गोभी 3, अर्ली कुंवारी, पूसा अर्ली, सिन्थेटिक अगेती गोभी की उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।

❖ बोआई से पहले प्रति किग्रा बीज को 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा अथवा 2 ग्राम थायरम या केप्टान से उपचारित करके ही बोयें।

❖ बीज की बोआई 1.5 सेंमी की गहराई पर, 10 सेंमी के अन्तराल पर बनी कतारों में करें।

- ❖ बैंगन, टमाटर व मिर्च की फसलों में सिंचाई व आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई करें।
- ❖ भिण्डी की फसल की बोआई के लिये उपयुक्त समय है। परभनी क्रान्ति, आजाद भिण्डी, अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, वी.आर.ओ.–5,वी.आर.ओ.–6 व आई.आई.वी. आर.–10 भिण्डी की उन्नत एवं डी.वी.आर. 1, डी.वी.आर. 2, डी.वी.आर. 3, डी.वी. आर. 4, वर्षा, उपहार व विशाल संकर किस्में हैं।
- ❖ भिण्डी की बोआई के लिये खेत की तैयारी करते समय प्रति हेक्टेयर 300 कुन्तल गोबर की सड़ी खाद या 75–80 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट मिला दें। बोआई के पूर्व 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (77–88 किग्रा यूरिया), 50 किग्रा फास्फोरस (312 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट)व 50 किग्रा पोटाश (85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- ❖ इस समय बोआई 45–60×30 सेंमी पर करें, जिसके लिये प्रति हेक्टेयर 8–10 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ लोबिया की बोआई के लिये पूसा कोमल, पूसा बरसाती, पूसा दो फसली, पूसा सम्पदा, पूसा 578, पूसा रेशमी, पूसा 1103, स्वर्ण हरिता, काशी श्यामल, काशी गौरी व अर्का गरिमा अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- ❖ लोबिया की झाड़ीदार किस्मों की बोआई 40–50×10–15 सेंमी तथा फैलने वाली किस्मों की बोआई 90×20–25 सेंमी पर करनी चाहिये, जिसके लिये प्रति हेक्टेयर 15–20 किग्रा बीज की आवश्यकता पड़ेगी।
- ❖ लोबिया की अच्छी फसल के लिये प्रति हेक्टेयर 20–25 टन गोबर या 75 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट खाद के साथ बोआई के समय 40 किग्रा नाइट्रोजन, 50–60 किग्रा फास्फोरस व 50 किग्रा पोटाश (88 किग्रा यूरिया, 312–375 किग्रा एस.एस.पी. व 85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) देना पर्याप्त होगा।
- ❖ अरवी की बोआई के लिये 45–60×30–45 सेंमी की दूरी उपयुक्त होती है।
- ❖ अरवी के अंकुरित कन्दों की बोआई 7.5 सेंमी की गहराई पर करें। इसके लिये प्रति हेक्टेयर 10–15 कुन्टल कन्द की जरूरत होगी।
- ❖ अदकर व हल्दी की बोआई मई माह में न की हो तो इस समय कर लें।
- ❖ लौकी,खीरा, चिकनी तोरी, आरा तोरी, करेला व टिण्डा की बोआई के लिये उपयुक्त समय है।
- ❖ पन्त लौकी–3, पन्त लौकी–4,पूसा समर प्रोलिफिक लांग, पूसा नवीन, पंजाब कोमल, काशी गंगा, काशी बहार (संकर), लौकी की ःपूसा शीतल, खीरा कल्याणपुर, प्वाइन सेट, पूसा संयोग (संकट) खीरा की ः पूसा चिकनी, पूसा सुप्रिया चिकनी तोरी कीः वी आर एस–1, पूसा नसदार, पंजाब सदाबहार, सतपुतिया आरा तोरी की ः पूसा दो

मौसमी, पूसा विशेष, कल्याणपुर बारहमासी करेला की तथा टिण्डा की कल्याणपुर, लुधियाना सेलेक्शन, हिसार सेलेक्शन–1 व पंजाब टिण्डा उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।

- ❖ प्रति हेक्टेयर लौकी व आरा तोरी के लिये 4–5 किग्रा, खीरा के लिये 2–2.5 किग्रा तथा चिकनी तोरी, करेला व टिण्डा के लिये 5–6 किग्रा बीज की आवयकता होती है।
- ❖ बेबी कार्न की बोआई के 25 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 130 किग्रा यूरिया की टाप ड्रेसिंग कर दें।

**बागवानी**

- ❖ नये बाग के रोपण हेतु प्रति गड्ढा 30–40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद, एक किग्रा नीम की खली तथा आधी गड्ढे से निकली मिट्टी मिलाकर भरें। गड्डे को जमीन से 15–20 सेंमी ऊँचाई तक भरना चाहिये।
- ❖ केला की रोपाई के लिये उपयुक्त समय है। रोपण हेतु तीन माह पुरानी, तलवारनुमा, स्वस्थ व रोगमुक्त पुत्ती का ही प्रयोग करें।
- ❖ पुत्तियों के ऊपरी तने को कन्द से 25–30 सेंमी पर काट दें। रोपाई से पूर्व सभी पुत्तियों को (एक ग्राम बाविस्टीन प्रति लीटर पानी के घोल में) उपचारित करें।
- ❖ रोपाई के समय केवल कन्द भाग को ही मिट्टी में दबायें तथा रोपाई के बाद सिंचाई कर दें।
- ❖ पपीता में सितम्बर–अक्टूबर में लगाये गये पौधों में अतिरिक्त नर पौधों को निकाल दें।
- ❖ लीची में गूटी बाँधने का कार्य माह के दूसरे पखवाड़े में करें। इसमें मिलीबग की रोकथाम के लिये थालों में क्लोरपायरीफॉस चूर्ण (1.5 प्रतिशत) 250 ग्राम प्रति पेड़ की दर से तने के चारों ओर डाल कर गुड़ाई कर दें।
- ❖ नींबू में एक वर्ष के पौधे में 25 ग्राम नाइट्रोजन (55 ग्राम यूरिया) व 25 ग्राम पोटाश (42 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) जो क्रमशः बढ़कर 10 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिये 250 ग्राम नाइट्रोजन (550 ग्राम यूरिया) व 250 ग्राम पोटाश (425 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) हो जायेगी, का प्रयोग इस माह या फल लगाने के दो माह बाद करें।
- ❖ जस्ते की कमी दूर करने के लिये 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट और आवयकतानुसार अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करें।
- ❖ आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें।
- ❖ पुराने बागों में अन्तरासस्य के रूप में हल्दी व अदरक की बोआई करें।
- ❖ बेर में कटाई–छंटाई का कार्य कर लें।
- ❖ बेर में एक साल के पौधे के लिये 5 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फास्फेट व 25 ग्राम पोटाश (110 ग्राम यूरिया, 312 ग्राम

एस.एस.पी. व 42 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा यही मात्रा क्रमशः बढ़ाकर 8 या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिये 40 किग्रा गोबर की खाद, 400 ग्राम नाइट्रोजन (1100 ग्राम यूरिया) 400 ग्राम फास्फोरस (2500 ग्राम एस.एस.पी.) व 200 ग्राम पोटाश (340 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति पौधे की दर से प्रयोग करें।

- ❖ अंगूर को जल्दी पकाने व मिठास बढ़ाने के लिये एथीफोन 50 मिली+बोरैक्स 100 ग्राम 100 लीटर पानी में घोलकर पकने के 15 दिन पूर्व छिड़काव करें। इस समय सिंचाई पूर्णतः बन्द रखें।

**वानिकी**

- ❖ पापलर की नर्सरी व पुराने पौधों की एक सप्ताह के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।
- ❖ अगर पौधों पर तना छेदक कीट का प्रकोप हो तो डाई–मीथोएट 30 ई.सी. के 0.02 प्रतिशत घोल का छिड़काव कर दें।

**पुष्प, सुगन्ध व औषधीय पौधे**

- ❖ रजनीगंधा, देशी गुलाब एवं गेंदा में खरपतवार निकालें व आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- ❖ रजनीगंधा की फसल से प्रति स्पाइक फूलों की संख्या व स्पाइक की लम्बाई बढ़ाने के लिये जी.ए. 3(जिब्रेलिक एसिड) 50 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।
- ❖ बेला तथा लिली में आवश्यकतानुसार सिंचाई, निराई व गुड़ाई करें।
- ❖ माह के अन्त में मेंथा की फसल की दूसरी कटाई कर लें।
- ❖ सफेद मूसली, तुलसी तथा सतावर की रोपाई के लिये उपयुक्त समय है।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- ❖ गलाघोंटू तथा बी.क्यू. का टीका लगवायें।
- ❖ पशुओं को धूप–लू से बचायें।
- ❖ पशु चिकित्सक के मार्गदर्शन में गेहूँ के भूसे को यूरिया से उपचारित करा सकते हैं।
- ❖ स्वच्छ पानी की पर्याप्त व्यवस्था करें।
- ❖ बचा हुआ अथवा बासी चारा पशुओं को न खिलायें।
- ❖ पशुओं को परजीवी की दवा पिलायें।
- ❖ बांझपन की चिकित्सा तथा गर्भ परीक्षण करायें।
- ❖ सूखे खेत की कम विकसित हुयी चरी न खिलायें अन्यथा जहर फैलने का डर रहता है।

**मुर्गीपालन**

- ❖ मुर्गियों को गर्मी से बचायें –पर्दो पर पानी के छीटें मारें।
- ❖ निरन्तर स्वच्छ जल की उपलब्धता बनाये रखें।

- दोपहर के समय पानी में ग्लूकोज,विटामिन्स तथा लू से बचने के लिये इलेक्ट्रोलाइट दें।

# जुलाई

## फसलोत्पादन

**धान**

- धान की मध्यम व देर से पकने वाली प्रजातियों की रोपाई माह के प्रथम पखवाड़े में पूरा कर लें।
- शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की रोपाई जुलाई के दूसरे पखवाड़े तक की जा सकती है।
- सुगन्धित प्रजातियों की रोपाई माह के अन्त में करें।
- यदि हरी खाद का प्रयोग करना हो तो रोपाई के तीन दिन पूर्व ही उसे मिट्टी पलटने वाले हल से पलटकर, सड़ने के लिये खेत में पानी भर दें।
- भूमि में उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। मृदा परीक्षण न होने की दशा में रोपाई से पूर्व अधिक उपज वाली किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 60 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस व 60 किग्रा पोटाश (86 किग्रा यूरिया, 132 किग्रा डी.ए.पी. या 130 किग्रा यूरिया 375 किग्रा एस.एस.पी. तथा 100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) , संकर धान में 75 किग्रा नाइट्रोजन, 75 किग्रा फास्फोरस व 60 किग्रा पोटाश (108 किग्रा यूरिया, 165 डी.ए.पी. या 165 किग्रा यूरिया, 468 किग्रा एस.एस.पी. तथा 100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा सुगन्धित किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोजन, 30 किग्रा फास्फोरस व 30 किग्रा पोटाश (43 किग्रा यूरिया, 66 किग्रा डी.ए.पी. या 65 किग्रा यूरिया,187 किग्रा एस.एस.पी. तथा 50 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) आखिरी लेव लगाते समय अच्छी तरह भूमि में मिला दें।
- धान की रोपाई से पूर्व 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से जिंक सल्फेट खेत में मिला दें, परन्तु ध्यान रहे कि फास्फोरस वाले उर्वरक के साथ जिंक सल्फेट कभी न मिलायें।
- धान की रोपाई कतारों में 20×10 सेंमी की दूरी पर करें तथा प्रति स्थान 2–3 पौध व संकर धान की 1–2 पौधों की रोपाई करें।
- यदि रोपाई में देर हो जाये तो रोपाई 15×10 सेंमी पर, 40 दिन पुरानी तथा प्रति स्थान 3–4 पौध का प्रयोग करें।
- ऊसर भूमि में रोपाई के लिये 15×10 सेंमी के अन्तराल पर 35–40 दिन पुरानी, प्रति स्थान 4–5 पौध की रोपाई करें।

- ❖ धान की फसल में खरपतवार नियन्त्रण के लिये रोपाई के 3–4 दिन के अन्दर ब्यूटाक्लोर 50 ई.सी. 3–4 लीटर 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें या 5 प्रतिशत ब्यूटाक्लोर ग्रेन्यूल की 30–40 किग्रा मात्रा यूरिया में मिलाकर बिखेर दें। उक्त रसायन के न होने पर पेन्डीमेथेलीन 30 ई.सी. 3.5 लीटर या एनिलोफास 30 ई.सी. की 1.65 लीटर मात्रा रोपाई के 3–4 दिन के अन्दर प्रयोग करें।
- ❖ ध्यान रहे कि खेत में दानेदार रसायनों के प्रयोग के समय 4–5 सेंमी पानी अवश्य भरा हो।
- ❖ धान में खैरा रोग के लक्षण दिखाई देने पर प्रति हेक्टेयर 5 किग्रा जिंक सल्फेट व 2.5 किग्रा चूना 800 लीटर पानी में घोल बनाकार छिड़काव करें।

**मक्का**

- ❖ समय से बोई गई मक्का में बोआई के 15 दिन बाद प्रथम निराई–गुड़ाई, फिर एक सप्ताह के अन्तर पर दो बार गुड़ाई कर दें। घुटनों तक की ऊँचाई के पौधों के हो जाने पर निराई–गुड़ाई न करें।
- ❖ नाइट्रोजन की 40 किग्रा मात्रा (88 किग्रा यूरिया) बोआई के 30–35 दिन बाद पौधों के लगभग घुटनों तक की ऊँचाई के हो जाने पर कतारों के बीच में दें।

**ज्वार**

- ❖ ज्वार की बोआई माह के प्रथम पखवाड़े तक पूरी कर लें।
- ❖ ज्वार की बोआई के लिये प्रति हेक्टेयर 12–15 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ बोआई 45 सेंमी की दूरी पर बनी कतारों में, 15–20 सेंमी की दूरी पर करें।
- ❖ ज्वार की उन्नत एवं संकर प्रजातियों के लिये सिंचित दशा में प्रति हेक्टेयर आवश्यक नाइट्रोजन की आधी मात्रा अर्थात् 50–60 किग्रा, 50 किग्रा फास्फोरस तथा 40 किग्रा पोटाश (70–92 किग्रा यूरिया,110 किग्रा डी.ए.पी. या 110–132 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा एस.एस.पी. तथा 68 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा असिंचित दशा में सम्पूर्ण उर्वरक यानी 50–60 किग्रा, नाइट्रोजन, 25 किग्रा फास्फोरस तथा 20 किग्रा पोटाश बोआई के समय प्रयोग करें।

**बाजरा**

- ❖ बाजरा की बोआई 15 जुलाई के बाद पूरे माह की जा सकती है।
- ❖ बोआई के लिये प्रति हेक्टेयर 4–5 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ बाजरा की आई.सी.एम.वी.–155, डब्ल्यू.सी.सी.–75,राज–171, पूसा संकुल बाजरा 443(वर्षाधीन क्षेत्र), संकुल एवं पूसा–322, पूसा–23, जी.एच.वी.–316 और आई.सी. एम.एच.–451 प्रमुख संकर किस्में हैं।

**मूँग/उर्द/अरहर**

- ❖ मूँग/उर्द की फसल की बोआई के लिये उपयुक्त समय है।
- ❖ क्षेत्र विशेष के लिये अनुमोदित प्रजातियों की बोआई करें।
- ❖ मूँग या उर्द की प्रति हेक्टेयर बोआई के लिये 12–15 किग्रा बीज का प्रयोग करें।
- ❖ बोआई से पूर्व बीज को राइजोबियम कल्चर से अवश्य उपचारित करें।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 15 किग्रा नाइट्रोजन (33 किग्रा यूरिया), 40 किग्रा फास्फोरस (250 किग्रा एस.एस.पी) तथा 20 किग्रा गन्धक का प्रयोग करें।
- ❖ मूँग में बोआई की दूरी 45×10 सेंमी तथा उर्द में 30–35×10 सेंमी रखें।
- ❖ खरपतवार के रासायनिक नियन्त्रण के लिये पेन्डीमेथेलीन 30 ई.सी. की 3 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर बोआई के 2 दिन के अन्दर या एलाक्लोर की 4 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर बोआई के तुरन्त बाद प्रयोग करें।
- ❖ अरहर की देर से पकने वाली प्रजातियों की बोआई पूरी कर लें।
- ❖ अरहर की फसल में बोआई के 25–30 दिन बाद निराई–गुड़ाई करके खरपतवार तथा साथ ही सघन पौधों (आवश्यकता से अधिक) को निकाल देना चाहिये।

**सोयाबीन**

- ❖ सोयाबीन की बोआई के लिये माह का प्रथम पखवाड़ा सबसे अच्छा हैं।
- ❖ सोयाबीन की पी.के.472, पी.एस.564, पी.के.416, पी.के.1024, पूसा 16 व पी. एस. 1042 सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश तथा पूसा 20, जे.एस. 335, एन.आर.सी. 30 तथा एम.ए.यू.एस.47 बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिये उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।
- ❖ मृदा परीक्षण न होने पर सोयाबीन में बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 20–30 किग्रा नाइट्रोजन (44–66 किग्रा यूरिया), 70–80 किग्रा फास्फोरस (437–500 किग्रा एस. एस.पी.) व 40 किग्रा पोटाश (68 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रयोग करें।
- ❖ बोआई से पूर्व सोयाबीन के बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना जरूरी है।
- ❖ बोआई 45 सेंमी की दूरी पर बनी कतारों में, 4–5 सेंमी की दूरी पर करना चाहिये।
- ❖ खरपतवार के रासायनिक नियन्त्रण के लिये बोआई के तुरन्त बाद एलाक्लोर 50 ई. सी. की 4 लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**मूँगफली**

- ❖ मूँगफली की बोआई माह के प्रथम सप्ताह तक पूरी कर लें।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया), 50–60 किग्रा फास्फोरस (312–375 किग्रा एस.एस.पी) व 30–40 किग्रा पोटाश (50–68 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा 100 किग्रा जिप्सम कूड़ों में बीज से 2–3 सेंमी की दूरी पर डालनी चाहिये।

- ❖ गुच्छे वाली प्रजातियों। की बोआई 30×10–15 सेंमी तथा फैलने वाली प्रजातियों की बोआई 45×15–20 सेंमी पर करें।
- ❖ बोआई के सप्ताह बाद निराई करके प्रति हेक्टेयर 100 किग्रा जिप्सम डालकर हल्की गुड़ाई कर दें।

**गन्ना**

- ❖ गन्ने की फसल में मिट्टी चढ़ाने का कार्य इस माह पूरा कर लें।

**सूरजमुखी**

- ❖ खरीफ में सूरजमुखी की बोआई माह के प्रथम पखवाड़े में करें।
- ❖ संकर प्रजातियों की बोआई 60×20 सेंमी तथा संकुल प्रजातियों की बोआई 45×20 सेंमी पर करनी चाहिये। इसके लिये प्रति हेक्टेयर संकर प्रजाति 6–7.5 किग्रा तथा संकुल प्रजाति का 12–15 किग्रा बीज आवश्यक होगा।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया), 60 किग्रा फास्फोरस (375 किग्रा एस.एस.पी.) व 40 किग्रा पोटाश (68 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा जिंक की कमी होने पर 20–25 किग्रा जिंक सल्फेट प्रयोग करना चाहिये।
- ❖ सूरजमुखी में बोआई के 15–20 दिन बाद फालतू पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 20 सेंमी कर दें।

**चारे की फसलें**

- ❖ हरे चारे के लिये लोबिया, ज्वार, बहुकटाई वाली चरी, मक्का, बाजरा व ग्वार की बोआई करनी चाहिये।
- ❖ प्रति हेक्टेयर लोबिया के लिये 35–40 किग्रा, ज्वार का 40–45 किग्रा, बहुकटाई वाली चरी का 20–25 किग्रा, मक्का का 50–60 किग्रा तथा बाजरा का 10–12 किग्रा बीज आवश्यक होता है।
- ❖ ज्वार, बाजरा या मक्का तथा लोबिया को 2:1 अनुपात (ज्वार, बाजरा या मक्का की दो लाइनों के मध्य एक लाइन लोबिया) में बोने से अधिक पौष्टिक व अच्छा चारा प्राप्त होता है।

## सब्जियों की खेती

- ❖ बैंगन, मिर्च, अगेती फूलगोभी की रोपाई का समय है।
- ❖ रोपाई के समय बैंगन में 50 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फोरस व 50 किग्रा पोटाश (110 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा एस.एस.पी. व 85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) मिर्च में 35–40 किग्रा नाइट्रोजन, 40–60 किग्रा फास्फोरस व 40–50 किग्रा पोटाश (77–88 किग्रा यूरिया, 250–375 किग्रा एस.एस.पी. व 68–85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) तथा फूलगोभी में 40 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फेट

व 40 किग्रा पोटाश (88 किग्रा यूरिया, 375 किग्रा एस.एस.पी. व 68 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

- ❖ बैंगन की रोपाई 75–90×60 सेंमी, मिर्च 45–75×30–45 सेंमी तथा अगेती फूलगोभी की रोपाई 40×30 सेंमी पर करना चाहिये।
- ❖ यदि खेत में पानी रोकने की सम्भावना हो तो अगेती फूलगोभी की रोपाई मेड़ पर करें।
- ❖ जाड़े के टमाटर की फसल के लिये बीज की बोआई पौधशाला में करते हैं। इसके लिये मुक्त–परागित किस्मों के लिये 350–400 ग्राम तथा संकर किस्मों के लिये 200–250 ग्राम बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ खरीफ की प्याज के लिये पौधशाला में बीज की बोआई 10 जुलाई तक कर दें। प्रति हेक्टेयर रोपाई के लिये बीजदर 12–15 किग्रा होगी।
- ❖ चौलाई की बरसात की फसल के लिये बोआई पूरे महीने की जा सकती है। एक हेक्टेयर की बोआई के लिये 2–3 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों में बोआई के लगभग 25–30 दिन बाद पौधों के बढ़वार के समय प्रति हेक्टेयर 15–20 किग्रा नाइट्रोजन (33–44 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ लौकी, खीरा, चिकनी तोरी, आरा तोरी, करेला व टिण्डज्ञ की बोआई अभी भी की जा सकती है।
- ❖ पिछले माह में बोई गई लौकीवर्गीय सब्जियों में मचान बनाकर सहारा दें। सभी सब्जियों में उचित जल–निकास की व्यवस्था करें।
- ❖ बरसात वाली भिण्डी तथा अरवी की बोआई पूरी कर लें।
- ❖ पहले बोआई गयी भिण्डी की फसल में बोआई के 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (76–88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ हल्दी में प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) बोआई के 35–40 दिन बाद कतारों के बीच में डालें।
- ❖ अदरक में बोआई के 40 दिन बाद प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन की 25 किग्रा मात्रा (54 किग्रा यूरिया) मिट्टी चढ़ाते समय दें।
- ❖ सूरन की फसल में सम्पूर्ण आवश्यक नाइट्रोजन की आधी मात्रा अर्थात् 60 किग्रा (130 किग्रा यूरिया) प्रति हेक्टेयर की दर से बोआई के 65–70 दिन बाद खड़ी फसल में देना चाहिये।
- ❖ कुन्दरू की रोपाई के लिये उपयुक्त समय है। ग्रीष्म ऋतु में कतार से कतार व पौध से पौधे की 3 मीटर की दूरी पर 30×30×30 सेंमी आकार के खोदे गये गड्ढों में 2–3 किग्रा अच्छी प्रकार से सड़ी गोबर की खाद/नादेप कम्पोस्ट, 300 ग्राम नीम

की खली, यूरिया 50 ग्राम, सिंगल सुपर फास्फेट 200 ग्राम तथा म्यूरेट आफ पोटाश 100 ग्राम प्रति गड्ढे की दर से अच्छी तरह मिट्टी व बालू में मिलाकर 10 सेंमी की ऊँचाई तक भर दें तथा वर्षा प्रारम्भ होते ही कलिकायुक्त विकसित कलमों को इन गड्ढों में रोप दें।

- ❖ कुन्दरू में नर व मादा पौध अलग–अलग होते हैं। अतः अच्छी उपज के लिये 9 मादा पौधे पर एक नर पौधा अवश्य लगायें।

**फलों की खेती**

- ❖ आम, अमरूद, लीची, आँवला, कटहल, नींबू, जामुन, बेर, केला, पपीता के नये बाग लगााने का समय है।
- ❖ आम में शाखा गाँठ कीट की रोकथाम के लिये डाई–मेथोएट 30 ई.सी. 1.5 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- ❖ आम व लीची में रेडरस्ट तथा शूटी मोल्ड रोग की रोकथाम के लिये ब्लाइटाक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव करें।
- ❖ लीची में गूटी बाँधने का कार्य करें।
- ❖ बेर में मिलीबग कीट की रोकथाम के लिये मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. 1.5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ आँवले के बागों में एफिस की रोकथाम के लिये नीम ऑयल 5 मिलीलीटर प्रति लीटर का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ अंगूर में फल तोड़ने के बाद ब्लाइटाक्स 0.3 प्रतिशत तथा नीम आधारित फार्मूलेशन 2–5 मिली लीटर प्रति लीटर या क्लारपायरीफॉस 20 ई.सी. 2 मिलीलीटर प्रति लीटर का छिड़काव करें।

**पुष्प,सगन्ध व औषधीय पौधे**

- ❖ गुलाब में आवश्यकतानुसार बडिंग तथा जल–निकास का प्रबन्ध करें।
- ❖ रजनीगंधा में बरसात न होने पर आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई तथा पोषक तत्वों के मिश्रण का 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें
- ❖ रजनीगन्धा में स्पाइक (पुष्प डन्डियों) को समय–समय पर तोडें।
- ❖ मेंथा में जल निकास की समुचित व्यवस्था करें।
- ❖ सफेद मसूली, तुलसी, सतवार, अश्वगंधा, सर्पगंधा, कालमेघ व पामारोजा की रोपाई के लिये उपयुक्त समय है।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- ❖ गलाघोंटू तथा बी.क्यू, का टीका लगवायें।
- ❖ पशुओं को पेट के कीड़े मारने की दवा पिलायें।
- ❖ पशुओं को बरसात हेतु पूरा प्रबन्ध करें । फर्श तथा बिछावन को सूखा रखें।

- ❖ स्वदेशी/उन्नत प्रजाति के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करायें।
- ❖ पशुशाला को साफ सुथरा रखें तथा पशुओं का मक्खी व मच्छर से बचाव करें।

### मुर्गीपालन

- ❖ मुर्गीखाने को नमी तथा सीलन से बचायें।
- ❖ मुर्गीखानें में उचित प्रकाश की व्यवस्था करें।
- ❖ मुर्गीखानें एवं प्रयोग किये जाने वाले बर्तनों की धूल व गन्दगी की प्रतिदिन सफाई करें।
- ❖ अण्डे व मीट के लिये उपयुक्त प्रजातियों का चयन करें।

# अगस्त

## फसलोत्पादन

**धान**

- ❖ धान की देर से पकने वाली प्रजातियों की रोपाई अब न करें।
- ❖ शीघ्र पकने वाली प्रजातियों, जैसे साकेत 4, रत्ना, गोविन्द, नरेन्द्र 97, नरेन्द्र 80 की रोपाई यदि न हुई तो शीघ्र पूरी कर लें, परन्तु इस समय रोपाई के लिये 40 दिन पुरानी पौध का प्रयोग करें तथा 15×10 सेंमी की दूरी पर, प्रति स्थान 3–4 पौध लगायें।
- ❖ धान की रोपाई के 25–30 दिन बाद, अधिक उपज वाली प्रजातियों में प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया), संकर धान में 37.5 किग्रा नाइट्रोजन (82 किग्रा यूरिया) तथा सुगन्धित प्रजातियों में 15 किग्रा नाइट्रोजन (33 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ नाइट्रोजन की इतनी मात्रा की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग रोपाई के 50–55 दिन बाद, बाली बनने की प्रारम्भिक अवस्था (बूटिंग) पर करनी चाहिये।
- ❖ ध्यान रहे टाप ड्रेसिंग से पूर्व खरपतवार निकाल दें तथा टाप ड्रेसिंग करते समय खेत में 2–3 सेंमी से अधिक पानी न खड़ा हो।
- ❖ खैरा रोग की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 5 किग्रा जिंक सल्फेट तथा 2.5 किग्रा चूना या 20 किग्रा यूरिया को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ धान के तना छेदक कीट की रोकथाम के लिये ट्राइकोग्रामा नामक परजीवी को 8–10 दिन के अन्तराल पर छोड़ना चाहिये या प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा कार्बोफ्यूरान 3 जी दवा खेत में 4.5 सेंमी पानी होने पर प्रयोग करें अथवा क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ धान में फुदके से बचाव के लिये प्रति हेक्टेयर फोरेट 10 जी. 10 किग्रा या कार्बोफ्यूरान 3जी. 20 किग्रा खेत में 4–5 सेंमी पानी रहने पर प्रयोग करें अथवा

बी.पी.एम.सी. एक मिलीलीटर और डाईक्लोरोवास (नुवान) एक मिलीलीटर अथवा इथोफेन/इथोफेनप्राक्स 20 ई.सी. की एक मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से पौधों के निचले भाग पर छिड़काव करें।

- ❖ धान की फसल से अधिक उपज के लिये खेत में हमेशा पानी भरा रहना आवश्यक नहीं है। वर्षा न होने की स्थिति में 6–7 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें।

**मक्का**

- ❖ मक्का में नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा (88 किग्रा यूरिया) की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग बोआई के 45–50 दिन बाद, नरमंजरी निकलते समय करनी चाहिये। ध्यान रहे कि खेत में उर्वरक प्रयोग करते समय पर्याप्त समय नमी हो।
- ❖ फसल में नरमंजरी व बाली बनते समय नमी की कमी नहीं होनी चाहिये अन्यथा उपज में 50 प्रतिशत तक कमी हो सकती है।
- ❖ मक्का के तना छेदक कीट से बचाव के लिये कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत ग्रेन्यूल 20 किग्रा प्रयोग करें अथवा पेनिट्रोथियान 50 ई.सी. 1.0 लीटर या क्यूनालफॉस 25 ई. सी. 2.0 लीटर या इण्डोसल्फान 1.5 लीटर रसायन प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**ज्वार**

- ❖ ज्वार की फसल में बोआई के तीन सप्ताह बाद विरलीकरण (थिनिंग) क्रिया द्वारा लाइन में पौधों की आपस की दूरी 15–20 सेंमी कर देनी चाहिये।
- ❖ संकर/उन्नत प्रजातियों में प्रति हेक्टेयर 50–60 किग्रा नाइट्रोजन (110–130 किग्रा यूरिया) की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग बोआई के 30–35 दिन बाद करें।
- ❖ ज्वार के तना छेदक कीट के नियन्त्रण के लिये कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत ग्रेन्यूल 20 किग्रा प्रयोग करें अथवा पेनिट्रोथियान 50 ई.सी. 1.0 लीटर या क्यूनालफॉस 25 ई. सी. 2.0 लीटर या इण्डोसल्फान 1.5 लीटर रसायन प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**बाजरा**

- ❖ बाजरा की बोआई माह के मध्य तक अवश्य पूरी कर लें।
- ❖ बोआई के 15 दिन बाद, कमजोर पौधों को निकालकर लाइन में पौधों की आपस की दूरी 10–15 सेंमी कर लेना चाहिये।
- ❖ उच्च उत्पादन वाली प्रजातियों में नाइट्रोजन की शेष आधी अर्थात् प्रति हेक्टेयर 40–50 किग्रा (88–110 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें।

**मूँग/उर्द**

- ❖ खेत में निराई–गुड़ाई करके खरपतवार निकाल दें।
- ❖ पीला मोजैक रोग की रोकथाम के लिये डाईमेथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई.सी. की एक लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल कर आवश्यकतानुसार 10–15 दिनों के अन्तराल पर 3–4 छिड़काव करें।

**अरहर**

- ❖ बोआई के 25–30 दिन बाद निराई–गुड़ाई करके खरपतवार तथा साथ ही सघन पौधों को निकाल दें। पहली निराई के 20 दिन बाद दूसरी निराई भी करें, जिससे खेत में खरपतवार न रहे।

**सोयाबीन**

- ❖ फसल की बोआई के 20–25 दिन बाद निराई कर खरपतवार निकाल दें। आवश्यकतानुसार दूसरी निराई भी बोआई के 40–45 दिन बाद करें।
- ❖ सोयाबीन पर नीला मोजैक बीमारी का विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः इसकी रोकथाम के लिये क्यूनालफॉस 35 ई.सी. की 1.5 लीटर मात्रा या डाईमेथोएट 30 ई.सी. की एक लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**मूँगफली**

- ❖ मूँगफली में दूसरी निराई–गुड़ाई बोआई के 35–40 दिन बाद करके साथ ही मिट्टी भी चढ़ा दें।
- ❖ मूँगफली की टिक्का बीमारी, जिसमें पत्तियों पर भूरे गोल धब्बे बन जाते हैं, की रोकथम के लिये जिंक मैग्नीज कार्बामेंट 2.0 किग्रा या जिनेब 75 प्रतिशत की 2.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करना चाहिये।

**सूरजमुखी**

- ❖ सूरजमुखी में बोआई के 15–20 दिन बाद फालतू पौधों को निकालकर लाइन में पौधों की दूरी 20 सेंमी कर लेनी चाहिये।
- ❖ फसल में बोआई के 40–45 दिन बाद दूसरी निराई–गुड़ाई के साथ ही 15–20 सेंमी मिट्टी चढ़ा दें
- ❖ सूरजमुखी में बोआई के 25–30 दिन बाद खड़ी फसल में प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर देनी चाहिये।

**गन्ना**

❖ गन्ना को बाँधने का कार्य इस माह में अवश्य करें। इस समय गन्ने की लम्बाई 2 मीटर हो जाती है। ध्यान रहे कि बाँधते समय हरी पत्तियाँ एक समूह में न बँधे।

## सब्जियों की खेती

❖ शिमला मिर्च, टमाटर व गोभी की मध्यमवर्गीय किस्मों की बोआई पौधशाला में पूरे माह कर सकते हैं, जबकि पत्तागोभी की नर्सरी डालने का उचित समय माह के अन्तिम सप्ताह से शुरू होता है।

❖ बैंगन, मिर्च, अगेती फूलगोभी व खरीफ प्याज की रोपाई करें।

❖ फूलगोभी में प्रति हेक्टेयर 200–250 कुन्तल सड़ी गोबर की खाद या 80 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट खेत की तैयारी के समय तथा 40 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस तथा 40 किग्रा पोटाश (42 किग्रा यूरिया, 132 किग्रा डी.ए.पी. या 88 किग्रा यूरिया व 375 किग्रा एस.एस.पी तथा 68 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) अन्तिम जुताई या रोपाई से खेत में अच्छी तरह मिला दें।

❖ प्याज के खेत की तैयारी के समय 200–250 कुन्तल सड़ी गोबर की खाद या 70–80 कुन्तल नादेप मिला दें। रोपाई के लिये तैयारी करते समय अन्तिम जुताई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 35 किग्रा नाइट्रोजन (77 किग्रा यूरिया) , 50 किग्रा फास्फोरस (312 किग्रा एस.एस.पी.) व 60 किग्रा पोटाश ( म्यूरेट ऑफ पोटाश ) मिलाये।

❖ बैंगन, मिर्च, भिण्डी की फसलों में निराई–गुड़ाई व जल–निकास तथा फसल–सुरक्षा की व्यवस्था करें।

❖ रोपाई के 30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर बैंगन में 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया), मिर्च में प्रति 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (76–88 किग्रा यूरिया) तथा फूलगोभी में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें।

❖ भिण्डी की फसल में बोआई के 50 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (76–88 किग्रा यूरिया) की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग कर दें।

❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों में मचान बनाकर उस पर बेल चढ़ाने से उपज में वृद्धि होगी तथा स्वस्थ फल बनेंगे।

❖ अदरक में कंद सड़न व्याधि दिखायी देने पर चेस्ट नट कम्पाउंड (11 ग्राम अमोनियम कार्बोनेट + 2 ग्राम कापर सल्फेट) का छिड़काव करें।

❖ हल्दी में प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) व अदरक में 25 किग्रा नाइट्रोजन (54 किग्रा यूरिया) की दूसरी टाप ड्रेसिंग बोआई के 60–70 दिन बाद करें।

- ❖ परवल लगाने के लिये मग्घा नक्षत्र (15 अगस्त के आसपास का समय) सर्वोत्तम होता है।
- ❖ परवल की रोपाई के लिये अन्तिम जुताई के समय प्रति हेक्टेयर 200–250 कुन्तल सड़ी गोबर की खाद या 75 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट, 6–7 कुन्तल अरण्डी की खली, 20 किग्रा नाइट्रोजन, 40 किग्रा फास्फोरस (250 किग्रा एस.एस.पी.) व 40 किग्रा पोटाश (68 किग्रा एस.एस.पी.) खेत में डालना चाहिये।
- ❖ परवल की रोपाई के लिये 2×2 मीटर की दूरी पर 50 सेंमी व्यास के 30–40 सेंमी गड्ढे खोदकर उसमें आधा भाग मिट्टी, एक चौथाई सड़ी गोबर की खाद व एक चौथाई बालू, 100 ग्राम नीम की खली व 5 ग्राम फोरेट 10 जी मिलाकर जमीन से 15–20 सेंमी ऊँचाई तक भर देते हैं। परन्तु मचान बनाकर परवल उगाने पर दूरी 1.5×1.5 मीटर रखते हैं।
- ❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों में प्रति हेक्टेयर 25 किग्रा नाइट्रोजन (54 किग्रा यूरिया) को दो भागों में बाँटकर बोआई के 25–30 दिन व 40–50 दिन बाद टाप ड्रेसिंग करें।

**फलों की खेती**

- ❖ आम, अमरूद, बेर, आँवला, नींबू आदि के नये बाग लगाने का समय अभी चल रहा है। इनकी पौध किसी विश्वसनीय पौधशाला से ही प्राप्त करें।
- ❖ आम में शल्क कीट तथा शाखा गाँठ कीट के रोकथाम के लिये डाई मेथोएट 1.5 मिली दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करें। एक आम के बड़े पेड़ के लिये लगभग 30 लीटर घोल की आवश्यकता पड़ती है।
- ❖ आम व लीची में सूटी मोल्ड व रेड रस्ट रोग की रोकथाम के लिये ब्लाइटाक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव करें।
- ❖ नींबू में सिट्रस कैंकर रोग, जिसमें रोग के लक्षण (हल्के पीले धब्बे, जो बाद में भूरे व खुरदुरे हो जाते हैं) पत्तियों से प्रारम्भ होकर बाद में टहनियों, कांटो और फलों पर आ जाते हैं, की रोकथाम के लिये गिरी हुई पत्तियों को इकठ्ठा कर नष्ट कर दें तथा रोगयुक्त टहनियों की काट–छाँट कर दें। पेड़ पर ब्लाइटाक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर) का छिड़काव करें।
- ❖ आँवला में एक वर्ष के पौधे के लिये प्रति वृक्ष 10 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन (110 ग्राम यूरिया) व 38 ग्राम पोटाश (65 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) जो क्रमशः बढ़कर 10 वर्ष या उससे ऊपर के पौधों में 100 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 500 ग्राम नाइट्रोजन (1100 किग्रा यूरिया) व 375 ग्राम पोटाश (640 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) हो जायेगी, इस माह में प्रयोग करें।

- ❖ केले में प्रति पौधा 100 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश तथा 55 ग्राम यूरिया पौधे से 50 सेंमी दूर गोलाई में प्रयोग कर हल्की गुड़ाई कर भूमि में मिला दें।
- ❖ केले में बगल से निकलने वाली पुत्तियों को सावधानीपूर्वक काटकर निकाल दें।

**पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे**

- ❖ गुलाब के स्टाक की क्यारियों में बदलाई करें। आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई व रेड स्केल कीट का नियंत्रण करें।
- ❖ रजनीगंधा में पोषक तत्वों के मिश्रण का 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा स्पाइक की कटाई करें।
- ❖ अश्वगंधा की बोआई के लिये उपयुक्त समय है।
- ❖ सफेद मसूली में खरपतवार निकाल दें तथा निराई–गुड़ाई, सिंचाई या बरसात की वजह से आई जड़ों पर मिट्टी चढ़ा दें।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- ❖ नये आये पशुओं तथा अवशेष पशुओं में गलाघोंटू का टीका लगवायें।
- ❖ लीवर फ्लूक के लिये दवा पिलायें।
- ❖ नवजात बच्चों को खीस (कोलेस्ट्रम) अवश्य दें।
- ❖ गर्भित पशु की उचित देखभाल करें तथा पौष्टिक चारा दें।
- ❖ पशुशाला का साफ–सुथरा व सूखा रखें, पानी न जमा होने दें।
- ❖ मच्छरों से बचाव के लिये पशुशाला के पास नीम की पत्ती का धूँआ करें।
- ❖ वाह्य परजीवी के लिये दवा लगायें।

**मुर्गीपालन**

- ❖ अंडे के लिये नये चूजे द्वारा मुर्गियाँ पालने के लिये यह समय उपयुक्त नहीं है, परन्तु ब्रायलर के लिये मुर्गियाँ पालें।
- ❖ मुर्गी के पेट में कीड़ों को मारने (डिवर्मिंग) की दवा दें।
- ❖ मुर्गीखाने को सूखा रखें तथा बिछावन को पलटने रहें।
- ❖ मुर्गीखाने में अधिक नमी हो तो पंखा चलायें।
- ❖ पानी का क्लोरीनेशन अवश्य करें।

# सितम्बर

## फसलोत्पादन

**धान**

- ❖ धान में नाइट्रोजन की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग बाली बनने की प्रारम्भिक अवस्था (रोपाई के 50–55 दिन बाद) में, अधिक उपज वाली प्रजातियों में प्रति हेक्टेयर 30

किग्रा (65 किग्रा यूरिया), संकर धान में 37.5 किग्रा (82 किग्रा यूरिया) तथा सुगन्धित प्रजातियों में 15 किग्रा (33 किग्रा यूरिया) की दर सें करें।

- ❖ खेत में टाप ड्रेसिंग करते समय 2–3 सेंटीमीटर से अधिक पानी नहीं होना चाहिये।
- ❖ धान में बालियाँ फूटने तथा फूल निकलने के समय पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिये आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- ❖ तना छेदक की रोकथाम के लिये ट्राइकोग्रामा नामक परजीवी को 8–10 दिन के अन्तराल पर छोड़ना चाहिये। या प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा कार्बोफ्यूरान 3 जी दवा 3–5 सेंमी पानी में प्रयोग करें। अथवा क्लोरपायरीफास 20 ई0सी0 1.5 लीटर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ धान के भूरे फुदके से बचाव के लिये खेत से पानी निकाल दें। नीम आयल 2.0 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिये।
- ❖ जीवाणुधारी रोग व जीवाणु झुलसा रोग की रोकथाम के लिये पानी निकाल दें, नाइट्रोजन की टाप ड्रेसिंग बन्द कर दें। एग्रीमाइसीन 100 का 75 ग्राम या स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम व 500 ग्राम कापर आक्सीक्लोराइड को 500–600 लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
- ❖ भूरा धब्बा रोग की रोकथाम के लिये जिंक मैंग्नीज कार्बामेट 75 प्रतिशत का 2 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।
- ❖ धान में फूल आने के बाद, प्रति हिल 2–3 गन्धीबग कीट दिखाई देने पर उनके नियन्त्रण के लिये मैलाथियान 5 प्रतिशत धूल की प्रति हेक्टेयर 20–25 किग्रा मात्रा प्रातः या शाम को हवा कम होने पर बुरकाव करें।

**मक्का**

- ❖ अधिक बरसात होने पर मक्का में जल–निकास की व्यवस्था करें।
- ❖ फसल में नर मंजरी निकलने की अवस्था एवं दाने की दूधियावस्था सिंचाई की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। यदि विगत दिनों में वर्षा न हुई हो या नमी की कमी हो तो सिंचाई अवश्य करें।

**ज्वार**

- ❖ ज्वार से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये वर्षा न होने या नमी की कमी होने पर बाली निकलने के समय तथा दाना भरते समय सिंचाई करें।
- ❖ अर्गट या शर्करीय रोग की रोकथाम के लिये रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर जला दे। जीरम का 0.15 प्रतिशत घोल बनाकर फूल आने के समय से 7–10 दिन के

अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। दूसरे छिड़काव के साथ उक्त दवा के साथ 0.1 प्रतिशत कार्बरिल नामक कीटनाशी भी मिला देना चाहिये।

- ईयर हेडमिज व ईयर हेडबग के रोकथाम के लिये इण्डोसल्फान 35 ई.सी. अथवा क्यूनालफॉस 25 ई.सी की प्रति हेक्टेयर 1.5 लीटर मात्रा का छिड़काव करना चाहिये।

**बाजरा**

- बाजरा की उन्नत/संकर प्रजातियों में नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा यानि 40–50 किग्रा (88–110 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग बोआई के 25–30 दिन बाद करें।

**मूँग/उर्द**

- वर्षा न होने पर कलियाँ बनते समय पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिये सिंचाई करें।
- फली छेदक कीट की सूड़ियाँ, जो फली के अन्दर छेद करके दानों को खाती हैं, को रोकथाम के लिये निबौली का 5 प्रतिशत या इण्डोसल्फान 35 ई0सी0 या क्यूनालफास 25 ई0सी0 की 1.25 लीटर मात्रा का प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

**सोयाबीन**

- सोयाबीन में वर्षा न होने पर फूल एवं फली बनते समय सिंचाई करे।
- सोयाबीन में पीला मोजैक बीमारी की रोकथाम के लिये प्रभावित पौधों को निकालकर इण्डोसल्फान 35 ई0सी0 की 1.25 लीटर या डाईमेथोएट 30 ई0सी0 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**मूँगफली**

- मूँगफली में खूँटिया बनते (पेगिंग) समय तथा फलियाँ बनते समय पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिये आवश्यकतानुसार सिंचाई अवश्य करें।
- अधिक वर्षा होने पर जल–निकास की उचित व्यवस्था करें।
- टिक्का बीमारी की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर जिंक मैंग्नीज कार्बामेट 2.0 किग्रा या जिनेब 75 प्रतिशत की 2.5 किग्रा या जिरम 27 प्रतिशत तरल 3 लीटर का 2–3 छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर करना चाहिये।

**सूरजमुखी**

- यदि बरसात न हुई तो फूल निकलते समय व दाना बनते समय भूमि में पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिये सिंचाई अवश्य करें।
- सूरजमुखी के फूल में नर भाग पहले पकने के कारण परपरागण (मधुमक्खियों द्वारा) होता है। अतः खेत में या मेड़ों पर बक्सों में मधुमक्खी पालन किया जाय तो मुण्डकों में अधिक बीज बनने से उपज में वृद्धि होगी और साथ ही शहद भी अतिरिक्त आय के रूप में प्राप्त होगी।

- ❖ सूरजमुखी में हेडराट, जिसमें पहले तने व फिर मुण्डकों पर काले धब्बे बनते हैं, की रोकथाम के लिये मैंकोजेब 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुण्डक बनते समय छिड़काव करना चाहिये।
- ❖ मुण्डकों को चिड़ियों से बचाने के लिये अधिक लोग एक साथ बोआई करें। रंगीन चमकीली पन्नियों को फसल के ऊपर बाँधने से सुरक्षा की जा सकती है।

**गन्ना**

- ❖ गन्ने को बाँधने का कार्य, खासकर जिस गन्ने की अच्छी बढ़वार हो, पूरी कर लें।
- ❖ पहले कतार के अन्दर ही सेवा से डेढ़ मीटर की ऊँचाई पर गन्ने को बाँध दें। आगे चलकर एक कतार के गन्ने को दूसरे कतार के गन्ने से बाँधे। ध्यान रखें, बाँधते समय ऊपर की पत्तियाँ न टूटे।
- ❖ पायरिला की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर मिथाइल ओडिमेटान 1.5 लीटर 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने में गुरूदासपुर बोरर व शीर्ष बेधक (टाप बोरर) की रोकथाम के लिये थायोडान 35 ई0सी0 या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. की प्रति हेक्टेयर 1.5 लीटर मात्रा का 800–1000 लीटर में घोलकर छिड़काव करें।

**तोरिया**

- ❖ तोरिया की बोआई के लिये सितम्बर का दूसरा पखवाड़ा सबसे उत्तम है।
- ❖ टा–1, टा–9, भवानी, पी0टी0 303 व पी0टी0 507 तोरिया की अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- ❖ प्रति हेक्टेयर बोआई के लिये 4 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ तोरिया की बोआई 30×10–15 सेंटीमीटर पर, 3–4 सेंटीमीटर गहरी कूड़ों में करें।
- ❖ उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। यदि मृदा परीक्षण न हो तो सिंचित दशा में बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फेट व 50 किग्रा पोटाश (110 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा एस.एस.पी. व 85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- ❖ असिंचित दशा में प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन, 30 किग्रा फास्फोरस व 30 किग्रा पोटाश (110 किग्रा यूरिया, 187 किग्रा एस.एस.पी. व 50 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) बोआई के समय कूँड़ में प्रयोग करें।
- ❖ फास्फोरस तत्व के लिये सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें, यदि सिंगल सुपर फास्फेट उपलब्ध न हो तो प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा गन्धक का प्रयोग करना चाहिये।

## सब्जियों की खेती

- ❖ टमाटर, विशेषकर संकर प्रजातियों व गाँठ गोभी के बीज की बोआई नर्सरी में करें।

- पत्तागोभी की अगेती किस्मों जैसे– पूसा हाइब्रिड–2, गोल्डन एकर की बोआई 15 सितम्बर तक मध्यम व पिछेती किस्में जैसे पूसा ड्रमहेड, संकर क्विस्टो की बोआई 15 सितम्बर के बाद प्रारम्भ की जा सकती है।
- शिमला मिर्च की रोपाई पौध के 30 दिन के होने पर 50–60×40 सेंटीमीटर की दूरी पर करें।
- शिमला मिर्च में रोपाई के समय प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फेट एवं 60 किग्रा पोटाश (110 किग्रा यूरिया, 375 किग्रा एस.एस.पी. व 100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- पत्तागोभी की रोपाई सितम्बर के अन्तिम सप्ताह से शुरू की जा सकती है।
- पत्तागोभी में रोपाई के पूर्व 200–250 कुन्टल गोबर की सड़ी खाद या 80 कुन्टल नादेप कम्पोस्ट मिला दें तथा रोपाई के समय 50 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस व 60 किग्रा पोटाश (110 किग्रा यूरिया, 375 किग्रा एस.एस.पी. व 100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रयोग करें।
- टमाटर में कम बढ़ने वाली प्रजातियों के लिये रोपाई की दूरी 60×60 सेंमी0 तथा अधिक बढ़ने वाली प्रजातियों में दूरी 75–90×60 सेंमी0 रखनी चाहिये।
- टमाटर की रोपाई के समय प्रति हेक्टेयर 250–300 कुन्टल सड़ी गोबर की खाद या 70–80 कुन्टल नादेप कम्पोस्ट के साथ 40 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फोरस, 60–80 किग्रा पोटाश (50 किग्रा यूरिया,110 किग्रा डी0ए0पी0, 88 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा एस.एस.पी. तथा 375–800 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) एवं जिंक व बोरान की कमी होने पर 20–25 किग्रा जिंक सल्फेट व 8–10 किग्रा बोरैक्स का प्रयोग करें।
- मध्यमवर्गीय फूलगोभी जैसे इम्प्रूव्ड जापानी, पूसा दीपाली, पूसा कार्तिकी की रोपाई के लिये पूरा माह उपयुक्त है।
- प्याज की रोपाई के 30 दिन बाद खरपतवार निकालकर प्रति हेक्टेयर 35 किग्रा नाइट्रोजन (76 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें।
- रोपाई के 45 दिन बाद प्रति हेक्टेयर बैगन में 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया) मिर्च में 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (76–88 किग्रा यूरिया) तथा फूलगोभी में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग कर दें।
- बैंगन में तना एवं फल छेदक की रोकथाम के लिये ग्रसित भाग को तोड़कर भूमि में दबा दें। नीम गिरी 4 प्रतिशत का छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर करना चाहिये।
- मूली की एशियाई किस्मों जैसे जापानी ह्वाइट, पूसा चेतकी, हिसार मूली नं0 1, कल्याणपुर–1,काशी श्वेता व काशी हंस, की बोआई इस माह से शुरू की जा सकती है।

- ❖ मूली के लिये प्रति हेक्टेयर 6–8 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ मेथी की अगेती फसल के लिये 15 सितम्बर से बोआई कर सकते हैं। इसके लिये प्रति हेक्टेयर 25–30 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ वर्षा समाप्त होते ही इस माह हरी पत्ती के लिये धनिया की प्रजाति पन्त हरीतिमा, आजाद धनिया–1 की बोआई प्रारम्भ कर सकते हैं।
- ❖ अगेती बोआई के लिये आलू की कुफरी अशोका, कुफरी चन्द्रमुखी, किस्में अच्छी हैं, जिनकी बोआई 25 सितम्बर से प्रारम्भ की जा सकती है।

**बागवानी**

- ❖ लीची में एक साल के पौधे के लिये 5 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फास्फोरस व 50 ग्राम पोटाश (110 ग्राम यूरिया, 156 ग्राम एस.एस.पी. व 85 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) जो बढ़कर क्रमशः 10 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिये 50 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद 500 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फास्फोरस तथा 500 ग्राम पोटाश (1100 ग्राम यूरिया, 1560 ग्राम एस.एस.पी. व 850 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रति पौधे की दर से प्रयोग करें।
- ❖ लीची के पौधों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देने पर 0.4 प्रतिशत जिंक सल्फेट का प्रयोग करें।
- ❖ आम में गमोसिस की रोकथाम हेतु प्रति वृक्ष 250 ग्राम जिंक सल्फेट, 250 ग्राम कापर सल्फेट 125 ग्राम बोरैक्स व 100 ग्राम बुझा चुना (10 वर्ष या अधिक उम्र के पौधे के लिये) भूमि में मिलायें। वर्षा न हो तो तुरन्त हल्की सिंचाई करें।
- ❖ आम में एन्थ्रैक्नोज रोग से बचाव के लिये कापर आक्सीक्लोराइड की 3 ग्राम मात्रा एक लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ ऑवला में फल सड़न रोग की रोकथाम के लिये ब्लाइटाक्स 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ ऑवला में शुष्क विगलन (काला गूदा रोग) जिसमें 80–90 प्रतिशत फल अन्दर से काले होकर अक्टूबर/नवम्बर में गिर जाते हैं, की रोकथाम के लिये 6 ग्राम बोरैक्स प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करते हैं।
- ❖ आँवला में इन्दर बेला कीट की रोकथाम के लिये डाईक्लोरोवास (नुवास) एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में बने घोल में रूई भिगोकर तार की मदद से छेदों में डालकर चिकनी मिट्टी से बन्द करें।
- ❖ केले में प्रति पौधा 55 ग्राम यूरिया पौधे से 50 सेंटीमीटर दूर घेरे में प्रयोग कर हल्की गुड़ाई करके भूमि में मिला दें।

- बनाना बीटिल की रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफास 1.25 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। कार्बोफ्यूरान 3 जी या फोरेट 10 जी 3–4 ग्राम प्रति पौधे की दर से तने के चारों ओर मिट्टी में मिलायें तथा इतनी ही मात्रा गोफे में डालें।

**पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे**

- रजनीगंधा के स्पाइक की कटाई–छँटाई एवं विपणन करें।
- ग्लैडियोलस की रोपाई इस माह से प्रारम्भ कर सकते हैं।
- ग्लैडियोलस के रोपाई की तैयारी के लिये प्रति वर्गमीटर 10 किग्रा गोबर की खाद/कम्पोस्ट, 200 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 200 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश रोपाई के 15 दिन पूर्व अच्छी तरह मिला दें।
- जाड़े के मौसम में फूल प्राप्त करने के लिये गेंदा के बीज की बोआई करें।
- सगन्ध एवं औषधीय पौधों के खेत में निराई–गुड़ाई करके खरपतवार निकाल दें।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- अवशेष पशुओं में एच.एस. एवं बी.क्यू. का टीका लगवायें।
- खुरपका–मुँहपका रोग की रोकथाम के लिये टीका लगवायें। इस रोग से ग्रसित पशुओं के घाव को पौटशियम परमैग्नेट से धोएँ।
- दो टीका के मध्य 15–20 दिन का अन्तराल अवश्य रखें।
- नवजात बच्चों को खीस (कोलस्ट्रम) अवश्य दें
- सभी पशुओं को पेट के कीड़े मारने की दवा पिलावें।
- गन्दे पोखरे तथा तालाब में पशुओं को न जाने दें। स्वच्छ पानी ही पीने के लिये दें।
- मेस्टाइटिस रोग का पता लगाने हेतु दूध की जाँच करायें।
- स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हेतु पशु स्वयं, दूध के बर्तन आदि की सफाई का ध्यान रखें।
- बाँझपन चिकित्सा एवं गर्भ परीक्षण करायें।

**मुर्गीपालन**

- मुर्गीखाने में कैल्शियम प्राप्ति के लिये सीप का चूरा रखें।
- पेट के कीड़ों को मारने के लिये दवा दें।
- मुर्गियों की चोंच काट दें
- मुर्गीखाने में 14–16 घंटे प्रकाश उपलब्ध करायें।
- ध्यान रखें कि मुर्गीखाने में प्रति मुर्गी के लिये 3 वर्गफीट स्थान उपलब्ध हो।
- अण्डे के लिये दरबे रखें।
- डीप लिटर के बिछावन को नियमित रूप से उलटते पलटते रहें।

# अक्टूबर

## फसलोत्पादन

**धान**

- ❖ धान में फूल आते समय तथा दाने की दूधियावस्था पर नमी बनाये रखने के लिये एक सप्ताह के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें, परन्तु कटाई से 15 दिन पूर्व सिंचाई बन्द कर दें।
- ❖ धान में जीवाणु झुलसा रोग, जिसमें पत्तियों के नोक व किनारे सूखने लगते हैं, की रोकथाम के लिये पानी निकालकर एग्रीमाइसीन 100 का 75 ग्राम या स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम व 500 ग्राम कापर ऑक्सीक्लोराइड जैसे क्यूप्राविट का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ तना छेदक कीट, जिसके आक्रमण से सूखी बाल बाहर निकलती है, जिसे सफेद बाल भी कहते हैं, की रोकथाम के लिये ट्राइकोग्रामा नामक परजीवी को 8–10 दिन के अन्तराल पर छोड़ना चाहिये। या कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत दवा की 20 किग्रा मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें अथवा क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ गन्धीबग, जिसमें कीटों द्वारा बाली का रस चूस लेने के कारण दाने नहीं बनते हैं और प्रभावित बालियाँ सफेद दिखाई देती हैं, की रोकथाम के लिये मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण प्रति हेक्टेयर 25–30 किग्रा की दर से फूल आने के समय बुरकाव करें।
- ❖ धान में भूरे फुदके, जिसमें पौधे से रस चूस लेने के कारण पौधे सूखकर गिर जाते हैं तथा फसल झुलस सी जाती है, की रोकथाम के लिये खेत से पानी निकाल दें। नीम ऑयल 1.5 लीटर अथवा कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- ❖ चूहों के नियन्त्रण के लिये जिंक फास्फाइड या बेरियम कार्बोनेट से बने चारे का प्रयोग करें।

**अरहर**

- ❖ फली छेदक कीट की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. या इण्डोसल्फान 25 ई.सी. 1.5 लीटर या कार्बराइल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2 किग्रा 800 लीटर पानी में घोलकर 15–20 दिन के अन्तराल पर दो छिड़काव करें।

**सोयाबीन**

- ❖ कार्बराइल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2 किग्रा अथवा क्यूनालफास 25 ई.सी. 1. 5 लीटर 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

**मूँगफली**

❖ फलियों की वृद्धि की अवस्था पर सिंचाई करें।

**शीतकालीन मक्का**

❖ सिंचाई की समुचित व्यवस्था होने पर मक्का की बोआई अक्टूबर के अन्त में की जा सकती है।

❖ संकर प्रजातियों के लिये प्रति हेक्टेयर 18–20 किग्रा व संकुल प्रजातियों के लिये 20–25 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।

**शीतकालीन गन्ना**

❖ इस समय बोआई के लिये अक्टूबर का पहला पखवारा उपयुक्त है।

❖ बोआई के लिये पिछले वर्ष शरद ऋतु में बोए गये गन्ने से बीज प्राप्त करें।

❖ बोआई शुद्ध फसल में 75–90 सेंमी तथा आलू, लाही या मसूर के साथ मिलवा फसल में 90 सेमी पर करें।

❖ एक हेक्टेयर बोआई के लिये 60–70 कु0 बीज की आवश्यकता होगी।

❖ उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। यदि परीक्षण न हुआ हो तो बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 60–75 किग्रा नाइट्रोजन (132–165 किग्रा यूरिया), 80 किग्रा फास्फोरस (500 किग्रा एस.एस.पी.) व 60 किग्रा पोटाश (100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग करें।

❖ बीज उपचार के बाद ही बोआई करें। 250 ग्राम एरीटान या 500 ग्राम एगलाल 100 लीटर पानी में घोलकर उससे 25 कु0 गन्ने के टुकड़े उपचारित किये जा सकते हैं।

**तोरिया/लाही**

❖ तोरिया/लाही की बोआई माह के प्रथम सप्ताह तक पूरी कर लें।

❖ बोआई के लिये शोधित बीज का ही प्रयोग करें।

❖ खरपतवार के रासायनिक नियन्त्रण के लिये प्रति हेक्टेयर पेण्डीमेथेलीन 30 ई.सी. 3.3 लीटर 800–1000 लीटर पानी में घोल बनाकर बोआई के तुरन्त बाद प्रयोग करें।

❖ बोआई के 20 दिन के अन्दर निराई–गुड़ाई कर दें साथ ही सघन पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 10–15 सेंमी कर दें।

❖ सितम्बर में बोई गई लाही में बोआई के बाद 25–30 दिन पर पहली सिंचाई कर दें तथा प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।

**राई सरसों**

- ❖ राई की बोआई के लिये माह का प्रथम पखवाड़ा सबसे उपयुक्त है।
- ❖ समय से बोआई के लिये बरूणा, पूसा बोल्ड, पूसा गोल्ड, बसन्ती, पूसा करिश्मा, पूसा सरसों–26, पूसा सरसों–27, पूसा कृष्णा, नरेन्द्र अगेती राई 4, नरेन्द्र राई 8501, रोहिणी, आर.के. 9902, आर.एच. 30, सी.एस. 52 तथा देर से बोआई के लिये क्रान्ति व वरदान अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- ❖ बोआई 45×15 सेंमी पर 3 सेंमी गहरी कूंड़ों में करें।
- ❖ उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। यदि परीक्षण न हुआ हो तो प्रति हेक्टेयर 60 किग्रा नाइट्रोजन (130 किग्रा यूरिया), 40 किग्रा फास्फोरस (250 किग्रा एस.एस.पी.) व 40 किग्रा पोटाश (67 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) का प्रयोग कूंड़ों में करें या अन्तिम जुताई के समय भूमि में मिला दें।
- ❖ फास्फोरस के लिये सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें अन्यथा प्रति हेक्टेयर 40–50 किग्रा गन्धक का प्रयोग आवश्यक है।
- ❖ आलू के साथ मिलवा फसल के लिये आलू की तीन कतार के बाद राई की एक कतार बोयें।
- ❖ बोआई के 20 दिन के अन्दर घने पौधों को निकालकर लाइन में उनके मध्य आपस की दूरी 15 सेंमी कर दें।

**चना**

- ❖ चना की बोआई माह के दूसरे पखवाड़े में करें।
- ❖ पूसा–256, अवरोधी, पी.जी.–114, राधे, टा.3, के.468, उदय, पंत जी–186, के.जी. डी. 1168, के.डब्ल्यू.आर. 108, डी.सी.पी. 92–3 (उकठा प्रतिरोधी), आई.पी.सी. 9767 (उकठा प्रतिरोधी एवं कम समय) तथा उसर क्षेत्र में बोआई के लिये करनाल चना–1 अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- ❖ काबुली चना की सदाबहार, के–4, के–5, पूसा–267, एल550 तथा पूसा हरा चना अच्छी किस्में हैं।
- ❖ बोआई के समय कूंड में या अन्तिम जुताई के समय 100–150 किग्रा डी.ए.पी. का प्रयोग करें।
- ❖ सदैव राइजोबियम कल्चर से उपचारित बीज प्रयोग करना चाहिये। बोआई असिंचित क्षेत्र में 30×10 सेंमी पर तथा काबुली चना व सिंचित क्षेत्र में बोआई 40–45 सेंमी पर 8–10 सेंमी गहराई में करें।
- ❖ एक हेक्टेयर बोआई के लिये 80–100 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।

**मटर**

- ❖ मटर की बोआई माह के दूसरे पखवाड़े में करें।

- ❖ रचना, पन्त मटर 5, अपर्णा, मालवीय मटर 2, मालवीय मटर 15, शिखा एवं सपना अच्छी प्रजातियाँ हैं।
- ❖ दानों की सामान्य किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 80–100 किग्रा तथा बौनी किस्मों के लिये 125 किग्रा बीज आवश्यक होगा।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया), 60 किग्रा फास्फोरस (375 किग्रा एस.एस.पी.) व 30–40 किग्रा पोटाश (50–68 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) का प्रयोग करें।

**बरसीम**

- ❖ बरसीम की बोआई माह के प्रथम पखवाड़े में प्रति हेक्टेयर 25–30 किग्रा बीज की दर के साथ 1–2 किग्रा चारे वाली राई मिलाकर करें।
- ❖ बोआई से पूर्व अन्तिम हैरो चलाते समय प्रति हेक्टेयर 20–30 किग्रा नाइट्रोजन (44–66 किग्रा यूरिया) एवं 80 किग्रा फास्फोरस (500 किग्रा एस.एस.पी.) का प्रयोग करें।
- ❖ सदैव कासनी रहित एवं बरसीम कल्चर से उपचारित बीज का ही प्रयोग करें।

**गेहूँ**

- ❖ असिंचित क्षेत्रों में गेहूँ बोने का कार्य अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह से प्रारम्भ करें।
- ❖ असिंचित क्षेत्रों के लिये सी–306, के–8027, के–8962 एवं अमर अच्छी किस्में हैं।

**जौ**

- ❖ असिंचित क्षेत्रों में जौ की बोआई 20 अक्टूबर से शुरू कर सकते हैं।
- ❖ असिंचित क्षेत्रों के लिये के–141, के–560 (हरितमा), के–1149 (गीतांजली– छिलका रहित प्रजाति), के–226 (लखन), के–603, आर0डी0 2502 अच्छी किस्में है।
- ❖ प्रति हेक्टेयर बोआई के लिये 80–100 किग्रा बीज का प्रयोग करें।

## सब्जियों की खेती

- ❖ आलू की अगेती किस्मों : कुफरी अशोका, कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी जवाहर की बोआई 10 अक्टूबर तक तथा मध्य एवं पिछेती फसल : कुफरी बादशाह, कुफरी सतलज, कुफरी पुखराज, कुफरी लालिमा की बोआई 15–25 अक्टूबर तक करें।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 80–100 किग्रा नाइट्रोजन, 80 किग्रा फास्फोरस एवं 100 किग्रा पोटाश (114–158 किग्रा यूरिया, 175 किग्रा डी.ए.पी. या 175–220 किग्रा यूरिया, 500 किग्रा एस.एस.पी. तथा 200 किग्रा पोटैशियम सल्फेट) का प्रयोग करें।

- ❖ एक हेक्टेयर आलू की बोआई के लिये लगभग 20–25 कु0 बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ सब्जी मटर एवं लहसुन की बोआई करें।
- ❖ सब्जी मटर की अगेती किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 120–150 किग्रा तथा मध्यम व पिछेती किस्मों के लिये 80–100 किग्रा बीज का प्रयोग करें।
- ❖ सब्जी मटर के लिये बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया), 60 किग्रा फास्फोरस (375 किग्रा एस.एस.पी.) एवं 40 किग्रा पोटाश (68 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- ❖ लहसुन की बोआई 500–700 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से, 15×7.5 सेंमी की दूरी पर करें।
- ❖ जाड़े की अन्य सब्जियों पालक, मेथी, धनिया, गाजर, मूली की बोआई कतारों में करें।
- ❖ प्रति हेक्टेयर बोआई के लिये पालक व मैथी 25–30 किग्रा, गाजर 6–8 किग्रा, मूली 8–10 किग्रा तथा धनिया 15–30 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ फ्रेंच बीन की बोआई 15 अक्टूबर के बाद झाड़ीनुमा प्रजातियों को 40–50×10 सेंमी पर व बेलदार प्रजातियों में एक मीटर चौड़ी क्यारियाँ बनाकर उनके किनारों पर 30 सेंमी की दूरी पर करें।
- ❖ प्रति हेक्टेयर बोआई के लिये झाड़ीदार किस्म 50–60 किग्रा तथा फैलने वाली किस्म 25–30 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।
- ❖ फ्रेंचबीन में बोआई के समय सम्पूर्ण आवश्यक नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा अर्थात् प्रति हेक्टेयर 60 किग्रा नाइट्रोजन (132 किग्रा यूरिया), 50 किग्रा फास्फोरस (312 किग्रा एस.एस.पी.) एवं 50 किग्रा पोटाश (85 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) का प्रयोग करें।
- ❖ पछेती फूलगोभी जैसे पूसा स्नोबाल 1, पूसा स्नोबाल 2, स्नोबाल 16 व पूसा स्नोबाल के. 1 के बीज की बोआई पौधशाला में कर दें। पूसा स्नोबाल 2 की रोपाई 15 अक्टूबर के बाद कर सकते हैं।
- ❖ पत्तागोभी की मध्यावधि व पिछेती किस्मों की नर्सरी में बोआई पूरे अक्टूबर करते हैं तथा इनकी रोपाई भी मध्य अक्टूबर से प्रारम्भ की जा सकती है।
- ❖ रोपाई के 25–30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर मध्यवर्गीय फूलगोभी में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया), पत्तागोभी में 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया) की पहली टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ गांठ गोभी की रोपाई पूरे माह 30×20 सेंमी के अन्तराल पर करें और रोपाई के समय प्रति हेक्टेयर 35 किग्रा नाइट्रोजन (72 किग्रा यूरिया), 50 किग्रा फास्फोरस

(312 किग्रा एस.एस.पी.) एवं 50 किग्रा पोटाश (85 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) का प्रयोग करें।

- ❖ शिमला मिर्च में रोपाई के 20 दिन बाद प्रथम व 40 दिन बाद द्वितीय प्रति हेक्टेयर 25 किग्रा नाइट्रोजन (54 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करनी चाहिये।
- ❖ खरीफ प्याज की रोपाई के 45 दिन बाद, यदि खरपतवार हो तो निकालकर प्रति हेक्टेयर 35 किग्रा नाइट्रोजन (76 किग्रा यूरिया) की दूसरी व अन्तिम टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ टमाटर की रोपाई के समय उन्नतशील किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन,50 किग्रा फास्फोरस, 60–80 किग्रा पोटाश (50 किग्रा यूरिया, 110 किग्रा डी.ए.पी. या 88 किग्रा यूरिया, 312 किग्रा एस.एस.पी. तथा 100–135 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) एवं जिंक व वोरान की कमी होने पर 20–25 किग्रा जिंक सल्फेट व 8–12 किग्रा वोरैक्स का प्रयोग करें। संकर/असीमित बढ़वार किस्मों के लिये प्रति हेक्टेयर 55–60 किग्रा नाइट्रोजन (डी.ए.पी. प्रयोग करने पर 84–95 किग्रा यूरिया या सिंगल सुपर फास्फेट प्रयोग करने पर 120–130 किग्रा यूरिया) का प्रयोग करें।
- ❖ टमाटर की सीमित बढ़वार वाली प्रजातियों की रोपाई 60×60 सेंमी तथा असीमित बढ़वार वाली किस्मों की रोपाई 75–90×60 सेंमी पर करें।

**बागवानी**

- ❖ पपीता की रोपाई करें।
- ❖ आम के एक वर्ष के पौधे के लिये 5 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 50 ग्राम नाइट्रोजन (110 ग्राम यूरिया), 25 ग्राम फास्फोरस (156 किग्रा एस.एस.पी.) व 50 ग्राम पोटाश (85 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश) जो बढ़कर क्रमशः 10 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिये 50 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 500 ग्राम नाइट्रोजन (1100 ग्राम यूरिया) ,250 ग्राम फास्फोरस (1560 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट) व 500 ग्राम पोटाश (850 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश) प्रति पौधे की दर से प्रयोग करें। यदि आवश्यकता हो तो सिंचाई भी करें।
- ❖ अमरूद के एक वर्ष के पौधे के लिये प्रति वृक्ष 30 ग्राम नाइट्रोजन (65 ग्राम यूरिया) जो बढ़कर क्रमशः 6 वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिये 180 ग्राम नाइट्रोजन (650 ग्राम यूरिया) होगा, का प्रयोग करना चाहिये।
- ❖ केला प्रति पौधा 55 ग्राम यूरिया, 155 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश प्रयोग कर भूमि में मिला दें।
- ❖ यदि सितम्बर माह में लीची में खाद व उर्वरक का प्रयोग न किया हो तो इस माह अवश्य डाल दें।

- ❖ आंवला में शूट गाल मेकर से ग्रस्त टहनियों को काटकर जला दें।
- ❖ आंवला में शुष्क विगलन की रोकथाम के लिये 6 ग्राम बोरैक्स प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ आम में गुम्मा रोग की रोकथाम हेतु नैफ्थलीन एसिटिक एसिड का 200 पी.पी.एम. (4 मिलीलीटर प्लानोफिक्स प्रति 9 लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव करें।

**पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे**

- ❖ ग्लैडियोलस के कन्दों को 2 ग्राम बेविस्टीन एक लीटर पानी की दर से घोल बनाकर, 10–15 मिनट तक डुबोकर उपचारित करने के बाद 20–30×20 सेंमी पर 8–10 सेंमी की गहराई में रोपाई करें। रोपाई से पूर्व क्यारियों में प्रति वर्गमीटर 5 ग्राम कार्बोफ्यूरान अवश्य मिलायें।
- ❖ एक हेक्टेयर रोपाई के लिये लगभग 1.5–2 लाख कन्दों की आवश्यकता होती है।
- ❖ गुलाब के पौधों की कटाई–छंटाईकर कटे भागों पर डाईथेन एम.45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का हिसाब से छिड़काव करें।
- ❖ कटाई–छंटाई के बाद एक फुट की गोलाई में 6–9 इंच गहराई तक मिट्टी निकालकर मुख्य जड़ों को छोड़कर बाकी जड़ों को निकाल दें। 6–8 दिन तक खुला रहने के बाद इसमें 5–6 किग्रा गोबर/कम्पोस्ट खाद, 100–150 ग्राम हड्डी का चूरा, 50 ग्राम यूरिया, 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 50 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश व 40–50 ग्राम कीटनाशी का मिश्रण बनाकर गड्डों में भरकर हल्की सिंचाई कर दें।
- ❖ औषधीय एवं सगन्ध पौधों में नमी की कमी होने पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- ❖ खुरपका–मुँहपका का टीका अवश्य लगवायें।
- ❖ वर्षा ऋतु में पशुओं के पेट में कीड़े पड़ जाते हैं। अतः कृमिनाशक दवाओं को पिलायें।
- ❖ नवजात बच्चों को खीस/कोलस्ट्रम अवश्य पिलायें।
- ❖ पशुओं को स्वच्छ जल उपलब्ध करायें।
- ❖ गर्भपरीक्षण एवं बांझपन चिकित्सा करायें तथा गर्म पशुओं को समय से गर्भित करायें।
- ❖ स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हेतु पशुओं, स्वयं, वातावरण तथा बर्तनों की स्वच्छता रखें।

**मुर्गीपालन**

- ❖ मुर्गियों/चूजों को पर्याप्त प्रकाश उपलब्ध करायें।
- ❖ सन्तुलित आहार निर्धारित मात्रा में दें।
- ❖ कृमिनाशक दवा पिलवाएँ।
- ❖ बिछावने को नियमित रूप से पलटते रहें।

❖ रानीखेत बीमारी से बचाव के लिये टीका लगवायें।

# नवम्बर

## फसलोत्पादन

**धान**

❖ धान की शेष पकी फसल की कटाई कर लें।

❖ जो धान देर से रोपा गया था, उसमें दानों की दूधिया अवस्था तक हर हफ्ते सिंचाई करते रहें।

**गेहूँ**

❖ धान की कटाई के बाद गेहूँ के लिये खेत की तैयारी तत्काल कर लें। देख लें कि मिट्टी भुरभुरी हो जाय और ढेले न रहने पायें।

❖ गेहूँ में बोआई का सबसे अच्छा समय 5 से 30 नवम्बर तक का है। इस बीच गेहूँ की बोआई हर हालत में पूरी कर लें।

❖ प्रमाणित अथवा सत्य और शोधित बीज ही बोयें

❖ यदि बीज शोधित न हो तो प्रति किलोग्राम बीज को 2 ग्राम कैप्टान अथवा 2.5 ग्राम थायरम से शोधित कर लें।

❖ पी.बी.डब्ल्यू. 343, पी.बी.डब्ल्यू. 550 (Replace पी.बी.डब्ल्यू. 343), पी.बी.डब्ल्यू. 17, पी.बी.डब्ल्यू. 502, एच.डी. 2687, डब्ल्यू.एच. 542, यू.पी.–2382, यू.पी. –2338, एच.यू.डब्ल्यू.468, एच.यू.डब्ल्यू. 2045 गेहूँ की उपयुक्त किस्में हैं।

❖ सीमित सिंचाई की दशा में पी.बी.डब्ल्यू. 396, पी.बी.डब्ल्यू. 373, पी.बी.डब्ल्यू. 299 व डब्ल्यू.एच. 533 अच्छी प्रजातियाँ है।

❖ बोआई 20–30 सेंमी की दूरी पर कतारों मे हल के पीछे कूड़ों में या सीड ड्रिल से करें। इसमें प्रति हेक्टेयर 100 किग्रा बीज लगेगा।

❖ प्रति हेक्टेयर 60 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस व 40 किग्रा पोटाश (85 किग्रा यूरिया, 132 किग्रा डी.ए.पी. या 130 किग्रा यूरिया,375 किग्रा एस.एस.पी. तथा 67 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) बोआई के समय प्रयोग करें। यदि खरीफ में खेत परती रहा हो या दलहनी फसल ली गई हो, तो 60 किग्रा की जगह कुल 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया) डालना होगा। हाँ, अगर हरी खाद का प्रयोग किया गया है तो केवल 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) पर्याप्त होगा।

❖ अगर मिट्टी में जस्ते की कमी हो तो प्रति हेक्टेयर 25 किग्रा जिंक सल्फेट बोआई के पहले ही अन्तिम जुताई के समय खेत में मिला दें।

❖ खाद और बीज एक साथ डालने के लिये फर्टी–सीड ड्रिल का प्रयोग करना अच्छा होगा। अगर गेहूँ के साथ राई की सहफसली करनी हो, तो गेहूँ की प्रत्येक 9 कतार

के बाद एक कतार राई बो सकते हैं। याद रहे ! राई की बोआई छिटकवाँ तरीके से न करें।

- ❖ बोआई के 20–25 दिन बाद 6–8 सेंमी या 3–4 अंगुल की सिंचाई करना जरूरी है।
- ❖ अगर खेत समतल है तो सिंचाई से पहले, वरना सिंचाई के 3–4 दिन बाद 40–60 किग्रा नाइट्रोजन (88–132 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें।

**जौ**

- ❖ पूर्वी उत्तर प्रदेश में सिंचित क्षेत्र होने की दशा में जौ की बोआई 15 नवम्बर तक और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा बुन्देलखण्ड के इलाके में 15 से 30 नवम्बर के मध्य पूरी कर लें।
- ❖ सिंचित क्षेत्रों में समय से बोआई के लिये के–409 (प्रीती), के–287 (जागृति), नरेन्द्र जौ – 2, डी0डब्ल्यू0आर0यू0बी0 52, आर0डी0 2552, डी0डब्ल्यू 28, आर0डी0 2035 तथा सिंचित दशा में देर से बोआई के लिये के–572/10 (ज्योति), के–329 (मंजुला) एवं असिंचित क्षेत्र में देर से बोआई के लिये आर0डी0–2508, अच्छी किस्म है।
- ❖ ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिये नरेन्द्र जौ –1, नरेन्द्र जौ –3, आर0डी0 2552, एन0डी0बी0 11735 तथा सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं में विलम्ब से बोआई हेतु आर0एस0 6 बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिये उपयुक्त प्रजाति है।
- ❖ माल्ट हेतु के–508 (प्रगति), के–551 (ऋतम्बरा), डी0डब्ल्यू0आर0 28, डी0एल0 88 एवं बी0सी0यू0 73 (रेखा) उपयुक्त किस्में है।
- ❖ बोआई 20 सेंमी की दूरी पर 5–6 सेंमी की गहराई में कूड़ों में करें।
- ❖ यदि बीज प्रमाणित न हो तो बोआई से पूर्व कैप्टान व थायरम से उपचारित करें।
- ❖ बोआई के लिये प्रति हेक्टेयर 75 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- ❖ बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोज, 30 किग्रा फास्फोरस तथा आवश्यकता होने पर 20 किग्रा पोटाश (44 किग्रा यूरिया, 66 किग्रा डी.ए.पी. या 65 किग्रा यूरिया, 188 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 34 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रयोग करें।

**लाही**

- ❖ बोआई के 15–20 दिन पर अथवा हर हालात में सिंचाई के पहले पौधों की छटाई कर लें। पौधे घने होने और खरपतवार बढ़ने से लाही की उपज में 20–30 प्रतिशत की कमी हो सकती है। घने पौधों को निकालकर पौध से पौध की दूरी 10–15 सेंमी कर लें।

- ❖ बोआई के 30 दिन के बाद सिंचाई करें। इसके बाद ओट आने पर प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ पत्तियों को खाने वाली आरा मक्खी और बालदार गिडार के नियंत्रण के लिये प्रति हेक्टेयर इण्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.25 लीटर को पानी में घोलकर छिडकाव करना होगा।

**राई**

- ❖ बोआई के 15–20 दिन के बाद घने पौधों की छँटनी करके पौधों की आपसी दूरी 15 सेंमी कर लें।
- ❖ बोआई के 5 सप्ताह के बाद पहली सिंचाई और फिर ओट आने पर प्रति हेक्टेयर 60 किग्रा नाइट्रोजन (130 किग्रा यूरिया) का छिड़काव करें।
- ❖ कीटों की रोकथाम लाही की तरह ही करें।

**चना**

- ❖ बोआई के 30–35 दिन के बाद निराई–गुड़ाई कर लें।

**मटर**

- ❖ मटर में बोआई के 20 दिन बाद निराई कर लें।
- ❖ बोआई के 40–45 दिन बाद पहली सिंचाई करें। फिर 6–7 दिन बाद ओट आने पर हल्की गुड़ाई भी कर दें।

**मसूर**

- ❖ बोआई के लिये15 नवम्बर तक समय अच्छा है।
- ❖ पंत मसूर 639, पंत मसूर 406, पंत मसूर 234, पंत मसूर 4, पंत मसूर 5, पूसा वैभव, मलिका (के–75), पूसा 4, पूसा 6, डी.पी.एल. 15 (प्रिया) एवं नरेन्द्र मसूर –1 प्रजातियाँ उपयुक्त हैं।
- ❖ एक हेक्टेयर खेत में 40 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी। ध्यान रहे कि बीज प्रमाणित अथवा सत्य और शोधित हो।
- ❖ प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया), 55–60 किग्रा फास्फोरस (312–375 किग्रा एस.एस.पी.), 40 किग्रा पोटाश (67 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) की आवश्यकता होगी।
- ❖ अगर जिंक की कमी हो तो प्रति हेक्टेयर 25 किग्रा की दर से जिंक सल्फेट खेत की अन्तिम तैयारी के पहले जमीन में अच्छी तरह मिला दें।
- ❖ बोआई 20–25 सेंमी की दूरी पर कतारों में करें।

**शीतकालीन मक्का**

- ❖ सिंचाई की सुनिश्चित व्यवस्था होने पर रबी मक्का की बोआई माह के मध्य तक पूरी कर लें।
- ❖ मृदा परीक्षण न होने पर बोआई के समय सामान्यतः प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोज, 60 किग्रा फास्फोरस व 40 किग्रा पोटाश (44 किग्रा यूरिया, 132 किग्रा डी.ए.पी. या 88 किग्रा यूरिया, 375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट तथा 67 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) और यदि भूमि में जिंक की कमी हो तो बोआई से पहले 25 किग्रा जिंक सल्फेट भूमि में अवश्य मिलाना चाहिये।
- ❖ पहली निराई–गुड़ाई, बोआई के 20–25 दिन बाद करें जिससे खेत में खरपतवार न रहे।
- ❖ बोआई के लगभग 25–30 दिन बाद पहली सिंचाई कर दें।
- ❖ पौधों के लगभग घुटने तक की ऊँचाई के होने या बोआई के लगभग 30–35 दिन बाद प्रति हेक्टेयर 88 किग्रा यूरिया की टाप ड्रेसिंग कर दें।

**शरदकालीन गन्ना**

- ❖ बोआई के 3–4 सप्ताह बाद निराई–गुड़ाई कर लें।
- ❖ शरदकालीन गन्ना में यदि अन्तः फसल ली जा रही हो तो अन्तः फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं उर्वरक प्रबन्ध करें।

**बरसीम**

- ❖ बोआई के बाद 2–3 सिंचाई एक–एक हफ्ते पर और फिर आवयकतानुसार हर 20–25 दिन पर करते रहें।
- ❖ बोआई के 45 दिनों के बाद पहली कटाई करें।
- ❖ फसल कटाई के बाद फिर से सिंचाई करनी होगी।

**जई**

- ❖ नवम्बर का पूरा महीना चारे हेतु जई बोने के लिये अच्छा है।
- ❖ जई की केन्ट, यू.पी.ओ. 94, यू.पी.ओ. 212, फ्लेमिंग गोल्ड किस्में अच्छी हैं।
- ❖ एक हेक्टेयर में 80–100 किग्रा बीज की जरूरत होगी।
- ❖ खेत की अन्तिम तैयारी के समय 60 किग्रा नाइट्रोजन (132 किग्रा यूरिया) और 40 किग्रा फास्फोरस (250 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट) खेत में मिला दें। 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) बोआई के 25–30 दिन के बाद पहली सिंचाई के उपरान्त और 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) पहली कटाई यानि बोआई के 55–60 दिन के बाद प्रयोग करें।

## सब्जियों की खेती

- आलू की कुफरी बहार, कुफरी बादशाह, कुफरी अशोका, कुफरी सतलज, कुफरी आनन्द तथा लाल छिलके वाली कुफरी सिन्दूरी और कुफरी लालिमा मुख्य प्रजातियाँ हैं।
- प्रसंस्करण हेतु आलू की कुफरी चिप्सोना–1, चिप्सोना–2, चिप्सोना–3, एवं कुफरी आनन्द उपयुक्त प्रजातियाँ हैं।
- आलू की बोआई यदि अक्टूबर में न हो पायी हो तो अब जल्दी पूरी कर लें।
- आलू की पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सेंमी तथा पौधों से पौधों की दूरी 15–20 सेंमी होनी चाहिये।
- आलू का बीज दर कन्दों के आकार पर निर्भर करता है। सामान्यतः प्रति हेक्टेयर 22–25 कुन्तल बीज की आवश्यकता होती है।
- आलू की फसल के लिये बोआई के समय 80–100 किग्रा नाइट्रोजन, 80 किग्रा फास्फोरस तथा 100 किग्रा पोटाश (114–158 किग्रा यूरिया, 175 किग्रा डी.ए.पी. या 175–220 किग्रा यूरिया, 500 किग्रा एस.एस.पी. तथा 200 किग्रा पोटैशियम सल्फेट) प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकता होती है।
- अक्टूबर में बोये आलू की सिंचाई करें। बोआई के 25–30 दिन बाद 88–110 किग्रा यूरिया की टाप ड्रेसिंग करके मिट्टी चढ़ा देनी चाहिये।
- सब्जी मटर की बोआई 15 नवम्बर तक कर सकते हैं परन्तु अगेती प्रजातियों आर्किल, पन्त सब्जी मटर 3, पन्त मटर 2, आजाद पी. 3, व पूसा प्रगति की बोआई अब न करें। जवाहर मटर 1, आजाद पी. 1,2,4,5, पन्त उपहार, नरेन्द्र सब्जी मटर 1 व नरेन्द्र सब्जी मटर 2 मध्य व पिछेती बोआई के लिये उपयुक्त हैं।
- सब्जी मटर के लिये प्रति हेक्टेयर 80–100 किग्रा बीज लगेगा। बोआई 30 सेंमी की दूरी पर कतारों में करें।
- बोआई के समय मटर में प्रति हेक्टेयर 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) 60 किग्रा फास्फोरस (375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट) व 30–40 किग्रा पोटाश (50–65 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) प्रयोग करें।
- नवम्बर में फ्रेंचबीन, पालक, मेंथी, धनिया, मूली की बोआई की जा सकती है। अक्टूबर में बोयी गयी इन सब्जियों की आवश्यकतानुसार निराई व सिंचाई करें।
- पिछेती फूलगोभी, पत्तागोभी, गाँठगोभी व टमाटर की रोपाई करें।
- पिछती फूलगोभी, पत्तागोभी व गाँठगोभी में खेत की तैयारी से पूर्व प्रति हेक्टेयर 200–250 कुन्तल गोबर की खाद या 70–80 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट मिला दें तथा खेत में अन्तिम जुताई के समय प्रति हेक्टेयर फूलगोभी के लिये 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया), 60 किग्रा फास्फोरस (375 किग्रा एस.एस.पी.) व 40 किग्रा पोटाश (66 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश), पत्तागोभी में 50 किग्रा नाइट्रोजन (110

किग्रा यूरिया), 60 किग्रा फास्फोरस (375 सिंगल सुपर फास्फेट) व 60 किग्रा पोटाश (100 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) तथा गाँठगोभी में 34 किग्रा नाइट्रोजन (75 किग्रा यूरिया), 50 किग्रा फास्फोरस (312 किग्रा एस.एस.पी.) एवं 50 किग्रा पोटाश (84 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) मिला देते हैं।

- रोपाई के 25–30 दिन बाद प्रति हेक्टेयर फूलगोभी में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया), पत्तागोभी में 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया), गांठगोभी में 34 किग्रा नाइट्रोजन (75 किग्रा यूरिया) तथा टमाटर की उन्नत किस्मों में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) व संकर/असीमित बढ़वार वाली किस्मों के लिये 55–60 किग्रा नाइट्रोजन (120–130 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग तथा इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग रोपाई के 45–50 दिन बाद करनी चाहिये।
- टमाटर की बसन्त/ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिये पौधशाला में बीज की बोआई कर दें।
- टमाटर की पूसा रूबी, पूसा अर्ली ड्वार्फ, हिसार अरूण, हिसार लालिमा, अर्का सौरभ, पंजाब छुहारा, पन्त बहार, पन्त टमाटर–3 उन्नत एवं पूसा हाइब्रिड 2, अविनाश 2, नवीन, रूपाली, रश्मि व अपूर्वा संकर किस्में अच्छी हैं।
- एक हेक्टेयर खेत की रोपाई के लिये उन्नत किस्मों की 350–450 ग्राम और संकर किस्मों की 200–250 ग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है।
- लहसुन की बोआई यदि न हुई हो तो इस माह पूरी कर लें।
- लहसुन के लिये यमुना सफेद (जी–282) प्रजाति उपयुक्त है।
- लहसुन के खेत की तैयारी के समय प्रति हेक्टेयर 250–300 कुन्तल गोबर की खाद या 70–80 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट मिला दें और 35–40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया), 50 किग्रा फास्फेट (312 किग्रा एस.एस.पी.) व 50 किग्रा पोटाश (85 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) बोआई से पहले अन्तिम जुताई के समय प्रयोग करना चाहिये।
- पिछले माह बोये गये लहसुन की निराई–गुड़ाई तथा सिंचाई करे एवं बोआई के 40 दिन बाद 75 किग्रा यूरिया की प्रथम टाप ड्रेसिंग कर दें।
- प्याज की रबी फसल तथा शिमला मिर्च की बसन्त ऋतु की फसल के लिये पौधशाला में बीज की बोआई करें।
- रबी हेतु एग्रीफाउन्ड लाइट रेड, पूसा रेड, कल्याणपुर लाल, पूसा माधवी, अर्का कल्याण, अर्का निकेतन, अर्का प्रगति प्रजातियाँ अच्छी हैं।
- पौधशाला में बोने के लिये प्याज का प्रति हेक्टेयर 8–10 किग्रा बीज पर्याप्त होता है।

❖ जीरा की बोआई 40 सेंमी की दूरी पर बनी कतारों में प्रति हेक्टेयर 12–15 किग्रा बीज दर से कर सकते हैं।

## फलों की खेती

❖ आम एवं अन्य फलों के बाग में जुताई करके खरपतवार नष्ट कर दें।

❖ आम में मिलीबग कीट के नियंत्रण हेतु तने और थाले के आसपास क्लोरपायरीफॉस (1.5 प्रतिशत) 250 ग्राम प्रति पेड़ बुरकाव तथा तने के चारो ओर एल्काथीन की पट्टी लगायें।

❖ नये लगे छोटे पेड़ो की कतारों के बीच में चना/मटर/मसूर की बोआई करें।

❖ आम के पेड़ों में थेलों की सफाई कर दें तथा सूखी एवं रोगग्रस्त टहनियों को काट दें।

❖ अमरूद में छाल खाने वाले कीड़ों की रोकथाम डाइक्लोरोवास एक मिली प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छेदों में भरकर चिकनी मिट्टी से लेप कर दें।

❖ आँवला, नींबू, पपीता में सिंचाई करें।

❖ आँवला की तुड़ाई एवं विपणन की व्यवस्था करें।

❖ आँवले में दीमक से बचाव हेतु फोरेट 10 जी प्रति पौधा 25–30 ग्राम डालकर मिट्टी में मिला दें।

❖ आँवला में शूट गाल मेकर कीट से ग्रस्त टहनी को काटकर जला दें एवं पेड़ों पर डाइमेथोएट 2 मिली एवं मैंकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

❖ केले में प्रति पौधा 55 ग्राम यूरिया का प्रयोग करें तथा 10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।

❖ केले में पर्ण धब्बा एवं सड़न रोग के लिये 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर की दर सें छिड़काव करें।

## पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे

❖ देशी गुलाब की कलम काटकर अगले वर्ष के स्टाक हेतु क्यारियों में लगा दें।

❖ ग्लैडियोलस में स्थानीय मौसम के अनुसार सप्ताह में एक या दो बार सिंचाई करें।

❖ रजनीगंधा के स्पाइक की कटाई–छँटाई, पैकिंग, विपणन तथा पोषक तत्वों के मिश्रण क अन्तिम पर्णीय छिड़काव करें।

❖ जनवरी में रोपाई हेतु मेंथा को क्यारियों में दुबारा लगा दें।

❖ जिरेनियम की रोपाई 50×50 सेंमी के अन्तराल पर करनी चाहिये।

## पशुपालन/दुग्ध विकास

❖ संतति को खीस (कोलेस्ट्रम) अवश्य पिलायें।

❖ पशुओं को स्वच्छ जल ही पिलायें।

- ❖ खुरपका–मुँहपका रोग का निरोधक टीका लगवायें।
- ❖ कृमिनाशक दवा का सेवन करायें।
- ❖ पशुओं को संतुलित आहार देते रहें।
- ❖ थनैला रोग (दूध में छिछड़े आना) होने पर उपचार करायें।
- ❖ नमक मिश्रण खिलाते रहें।
- ❖ दुहने से पहले थन को साफ पानी से धोयें तथा बर्तन व वातावरण भी स्वच्छ रखें।

**मुर्गीपालन**

- ❖ लेयर फीड और सीप का भी दें।
- ❖ 14–16 घण्टे प्रकाश उपलब्ध करायें।
- ❖ कृमिनाशक दवा पिलायें।
- ❖ बिछावने को नियमित रूप से पलटते रहें।

# दिसम्बर

## फसलोत्पादन

**गेहूँ**

- ❖ गेहूँ की अवशेष बोआई शीघ्र पूरी कर लें। ध्यान रहे कि बोआई के समय मिट्टी में भरपूर नमी हो।
- ❖ इस समय बोआई के लिये पी.बी.डब्ल्यू. 373, राज 3765, यू.पी. 2425 तथा यू. पी. 2338 प्रजातियाँ उपयुक्त हैं।
- ❖ देर से बोये गेहूँ की बढ़वार कम होती है और कल्ले भी कम निकलते हैं। इसलिये प्रति हेक्टेयर बीज दर बढ़ाकर 125 किग्रा कर लें, लेकिन यदि यू.पी. 2425 प्रजाति ले रहे हैं, तो प्रति हेक्टेयर 150 किग्रा बीज लगेगा।
- ❖ प्रमाणित अथवा अपनी प्रजाति का सत्य और शोधित बीज ही बोयें। यदि बीज शोधित न हो तो प्रति किलोग्राम बीज को 2 ग्राम कैप्टान अथवा 2.5 ग्राम थायरम से शोधित कर लें।
- ❖ प्रति हेक्टेयर 120 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस व 40 किग्रा पोटाश (215 किग्रा यूरिया, 132 किग्रा डी.ए.पी. या 260 किग्रा यूरिया, 375 किग्रा एस.एस.पी. व 67 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) की जरूरत होगी। बोआई के समय बलुआर दोमट भूमि में फास्फेट और पोटाश की समूची मात्रा के साथ 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) जबकि भारी दोमट में 60 किग्रा नाइट्रोजन (132 किग्रा यूरिया) का प्रयोग करें।

- ❖ बोआई कतारों में हल के पीछे कूड़ों में या फर्टीसीड ड्रिल से करें।
- ❖ धान–गेहूँ फसल चक्र अपनाने पर गेहूँ की बोआई में प्रायः विलम्ब हो जाता है, ऐसी स्थिति में गेहूँ की बोआई जीरो टिलेज मशीन द्वारा की जा सकती है।
- ❖ अगर खेत में जस्ते की कमी हो, तो बोआई के समय प्रति हेक्टेयर 25 किग्रा जिंक सल्फेट का प्रयोग करें।
- ❖ गेहूँ की बोआई के 20–25 दिन पर 5–6 सेंमी की पहली सिचाई ताजमूल अवस्था पर और दूसरी सिंचाई 40–45 दिन पर कल्ले निकलते समय करें, परन्तु जीरो टिलेज विधि से बोआई करने पर 15–16 दिन बाद या बोआई के समय नमी कम होने पर बोआई के 8–10 दिन बाद ही सिंचाई करनी चाहिये।
- ❖ गेहूँ के समतल खेत में सिंचाई के पहले, वरना सिंचाई के 4–6 दिन बाद नाइट्रोजन की टाप ड्रेसिंग कर दें। इसमे देर न करें।
- ❖ बलुई दोमट भूमि में प्रति हेक्टेयर 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) व भारी दोमट भूमि में 60 किग्रा नाइट्रोजन (132 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग पहली सिंचाई के समय आवश्यक होगी।
- ❖ बलुई दोमट भूमि में नाइट्रोजन की शेष 40 किग्रा मात्रा (88 किग्रा यूरिया) दूसरी सिंचाई के समय प्रयोग करें।
- ❖ जहाँ गेहूँसा या गेहूँ का मामा कम है, लेकिन चौड़ी पत्ती वालेू खरपतवार जैसे बथुआ काफी है और गेहूँ के साथ सरसों या राई नहीं ली गयी है, वहाँ खरपतवार के नियंत्रण के लिये 2, 4–डी सोडियम साल्ट, 80 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 625 ग्राम मात्रा 500–600 पानी में घोलकर बोआई के 35 दिन बाद छिड़काव करें।
- ❖ गेहूँसा या गेहूँ के मामा की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर प्रतिशत वाली आइसोप्रोट्यूरान 1.0 किग्रा 500–600 लीटर पानी में घोलकर या सल्फोसल्फ्यूरान (लीडर) 25 ग्राम / क्लोडिनाफाप 60 ग्राम / फिनाक्साप्राप 90 ग्राम सक्रिय तत्व 250–300 लीटर पानी में घोलकर पहली सिंचाई के बाद, परन्तु 30 दिन की अवस्था से पूर्व छिड़काव करना चाहिये।
- ❖ सल्फोसल्फ्यूरान का प्रयोग करने पर चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार व गेहूँसा, दोनों का नियंत्रण हो जाता है।
- ❖ क्लोडिनाफाप या फिनाक्साप्राप के साथ 2, 4–डी नहीं मिलाना चाहिये, जबकि आइसोप्रोट्यूरान के साथ 2, 4–डी मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है।
- ❖ यदि 2, 4–डी का भी प्रयोग करना हो तो क्लोडिनाफाप या फिनाक्साप्राप के छिड़काव के एक सप्ताह बाद करना चाहिये।

**जौ**

- ❖ जौ में पहली सिंचाई, बोआई के 30–35 दिन बाद कल्ले बनते समय करनी चाहिये।

- ❖ सिंचाई के बाद नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा यानि 30 किग्रा (66–65 किग्रा यूरिया) प्रति हेक्टेयर की दर से टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ खरपतवार नियंत्रण गेहूँ की भांति करें।

**चना**

- ❖ बोआई के 45 से 60 दिन के बीच पहली सिंचाई कर दें।
- ❖ फिर ओट आने पर गुडाई करना काफी फायदेमन्द होगा।
- ❖ झुलसा रोग की रोकथाम के लिये प्रति हेक्टेयर 2.0 किग्रा जिंक मैगनीज कार्बामेंट को एक हजार लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तर पर दो बार छिड़काव करें।

**मटर**

- ❖ बोआई के 35–40 दिन पर पहली सिंचाई करें।
- ❖ खेत की गुड़ाई करना भी फायदेमन्द होगा।

**मसूर**

- ❖ मसूर की बोआई अभी भी कर सकते है, लेकिन प्रति हेक्टेयर 55 से 75 किग्रा बीज लगेगा।
- ❖ बोआई के 45 दिन बाद पहली हल्की सिंचाई करें। ध्यान रखें, खेत में पानी खड़ा न रहे।

**तोरिया**

- ❖ बोआई के लगभग 8 सप्ताह पर, जब फलियों में दाने भरने लगें, तब दूसरी सिंचाई कर दें।
- ❖ आरा मक्खी तथा माहू कीट का प्रकोप होने पर प्रति हेक्टेयर इण्डोसल्फान 35 ई.सी. अथवा मैलाथियान 50 ई.सी. 1.5 लीटर दवा एक हजार लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ❖ माहू कीट के नियन्त्रण के लिये परभक्षी कीट क्राइसोपरला के 50,000 कीट प्रति हेक्टेयर की दर से पूरे खेत में छोड़ना चाहिये।

**राई–सरसों**

- ❖ बोआई के 55–65 दिन पर फूल निकलने के पहले ही दूसरी सिंचाई कर दें।

**शीतकालीन मक्का**

- ❖ मक्का की बोआई के 20–25 दिन बाद पहली निराई–गुड़ाई करके सिंचाई कर दें और पुनः समुचित नमी बनाये रखने के लिये समय–समय पर सिंचाई करते रहें।
- ❖ रबी मक्का में प्रायः 4–6 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।
- ❖ बोआई के लगभग 30–35 दिन बाद, पौधों के लगभग घुटने तक की ऊँचाई के होने पर प्रति हेक्टेयर 88 किग्रा यूरिया की प्रथम टाप ड्रेसिंग व इतनी ही मात्रा की दूसरी

टाप ड्रेसिंग जीरा निकलने के पूर्व करनी चाहिये। ध्यान रहे, यूरिया की टाप ड्रेसिंग करते समय खेत में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है।

**शरदकालीन गन्ना**

- ❖ आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें। इससे गन्ना सूखने नहीं पायेगा और वजनी भी बनेगा।

**बरसीम**

- ❖ बोआई के 45 दिन बाद पहली कटाई करें। फिर हर 20–25 दिन पर कटाई करते रहें।
- ❖ हर कटाई के बाद सिंचाई करना जरूरी है।

**जई**

- ❖ हर तीन सप्ताह यानि 20–25 दिन पर सिंचाई करते रहें।
- ❖ बोआई के 20–25 दिन पर पहली सिंचाई के बाद 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) प्रति हेक्टेयर की टाप ड्रेसिंग कर दें।
- ❖ कटाई के बाद फिर से 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) प्रति हेक्टेयर की दर से दूसरी टाप ड्रेसिंग करें और फिर उसके बाद सिंचाई कर दें।

## सब्जियों की खेती

- ❖ सब्जियों में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई करें।
- ❖ पौधे को पाले से बचाव के लिये छप्पर या धूएँ का प्रबन्ध करें
- ❖ देर से बोये आलू में सिंचाई कर दें और बोआई के 25 दिन बाद 88–110 किग्रा यूरिया की टाप ड्रेसिंग करके मिट्टी चढ़ा दें।
- ❖ आलू में आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें तथा झुलसा एवं माहू के नियन्त्रण हेतु मैंकोजेब 2 ग्राम तथा फेनीट्रोथियान 50 ई. सी. 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10–12 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
- ❖ सब्जी मटर में बोआई के 25–30 दिन बाद सम्पूर्ण आवश्यक नाइट्रोजन की आधी मात्रा अर्थात् 30 किग्रा नाइट्रोजन (65 किग्रा यूरिया) टाप ड्रेसिंग के रूप में देनी चाहिये।
- ❖ सब्जी मटर में फूल आने के पूर्व एक हल्की सिंचाई कर दें। आवश्यकतानुसार दूसरी सिंचाई फलियाँ बनते समय करनी चाहिये।
- ❖ पिछेती फूलगोभी में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया), गांठगोभी में 34 किग्रा नाइट्रोजन (75 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग रोपाई के 20–25 दिन बाद तथा इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग रोपाई के 45–50 दिन बाद करनी चाहिये।

- ❖ टमाटर की उन्नत किस्मों में 40 किग्रा नाइट्रोजन (88 किग्रा यूरिया) व संकर/असीमित बढ़वार वाली किस्मों के लिये 55–60 किग्रा नाइट्रोजन (120–130 किग्रा यूरिया) की प्रथम टाप ड्रेसिंग रोपाई के 20–25 दिन बाद तथा इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग रोपाई के 45–50 दिन बाद करनी चाहिये।
- ❖ टमाटर की ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिये पौधशाला में बीज की बोआई कर दें।
- ❖ एक हेक्टेयर खेत की रोपाई के लिये टमाटर की उन्नत किस्मों की 350–400 ग्राम और संकर किस्मों की 200–250 ग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है।
- ❖ बसन्त–ग्रीम ऋतु की टमाटर की फसल के लिये तैयार पौध की रोपाई करें।
- ❖ सीमित बढ़वार वाली किस्मों की रोपाई 60×60 सेंमी तथा असीमित बढ़वार वाली किस्मों की रोपाई 75–90 सेंमी ×60 सेंमी पर करें।
- ❖ लहसुन की फसल में आवश्यकतानुसार निराई–गुड़ाई तथा सिंचाई करें एवं 74 किग्रा यूरिया की प्रथम टाप ड्रेसिंग बोआई के 40 दिन बाद व इतनी ही मात्रा की दूसरी टाप ड्रेसिंग बोआई के 60 दिन बाद कर दें।
- ❖ फ्रेन्चबीन में पहली सिंचाई फूल आने के ठीक पहले तथा दूसरी सिंचाई फली बनते समय करनी चाहिये।
- ❖ फ्रेन्चबीन में बोआई के लगभग 30 दिन बाद 60 किग्रा नाइट्रोजन (130 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ प्याज में खेत की तैयारी के समय रोपाई से तीन–चार हफ्ते पहले प्रति हेक्टेयर 250–300 कुन्टल गोबर की सड़ी खाद या 70–80 कुन्टल नादेप कम्पोस्ट मिला दें। फिर रोपाई के पहले 34 किग्रा नाइट्रोजन (75 किग्रा यूरिया), 50 किग्रा फास्फोरस (312 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट) एवं 60 किग्रा पोटाश का प्रयोग करें।
- ❖ प्याज की रोपाई के लिये 7–8 सप्ताह पुरानी पौध का प्रयोग करें।
- ❖ प्याज में खरपतवार नियन्त्रण के लिये रोपाई के दो–तीन दिन बाद पेन्डीमेथेलीन की 3.3 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ शिमला मिर्च की रोपाई पौध के 30 दिन के होने पर 50–60 सेंमी × 30–40 सेंमी की दूरी पर करनी चाहिये।
- ❖ शिमला मिर्च की रोपाई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 300–400 कुन्तल गोबर की खाद या 70–80 कुन्तल नादेप कम्पोस्ट तथा रोपाई के समय 50 किग्रा नाइट्रोजन (110 किग्रा यूरिया), 60 किग्रा फास्फोरस (375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट) व 60 किग्रा पोटाश (100 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश) प्रयोग करें।
- ❖ पालक व मेथी में पत्तियों की प्रत्येक कटाई के बाद प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा नाइट्रोजन (44 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग एवं सिंचाई करें।

- धनिया के पौधे 3–4 सेंमी के हो जाने पर प्रति हेक्टेयर 15 किग्रा नाइट्रोजन (33 किग्रा यूरिया) की टाप ड्रेसिंग कर दें। 15 किग्रा नाइट्रोजन (33 किग्रा यूरिया) की दूसरी टाप ड्रेसिंग पहली टाप ड्रेसिंग के 20–25 दिन बाद करें। आवश्यकतानुसार एक सप्ताह के अन्तर से सिंचाई करते रहें।
- टमाटर एवं मिर्च में झुलसा रोग से बचाव के लिये मैंकोजेब 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।

**फलों की खेती**

- आम तथा लीची में 'मिलीबग' की रोकथाम के लिये प्रति वृक्ष क्लोरपायरीफॉस चूर्ण (1.5 प्रतिशत) 250 ग्राम का बुरकाव पेड़ के एक मीटर के घेरे में कर दें। फिर पेड़ के तने पर जमीन से 30–40 सेंमी की ऊँचाई पर 400 गेज वाली एल्काथीन की 30 सेंमी चौड़ी पट्टी सुतली आदि से कसकर बांध दें और उसके दोनों सिरों पर गीली मिट्टी या ग्रीस से लेप कर दें। पेड़ पर मिली बग का प्रकोप नहीं होगा।
- बेर, आँवला, नींबू, अमरूद, पपीता और केला आदि की आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- बेर के फलों को गिरने से रोकने के लिये सुपरफिक्स हार्मोन 1.0 मिलीलीटर प्रति 4.5 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- पुराने बागों में आवश्यकतानुसार के रूप में हल्दी व अदरक की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- छोट फल, पौधों को छप्पर लगाकर या धुआँ देकर पाले से बचायें।

**पुष्प, सगन्ध व औषधीय पौधे**

- गुलाब में बडिंग और सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई करें।
- ग्लैडियोलस में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं निराई–गुड़ाई करें। मुरझाई टहनियों को निकालते रहें और बीज न बनने दें।
- रजनीगंधा की अन्तिम बहार की कटाई–छँटाई, पैकिंग एवं विपणन करें।
- मेंथा के लिये भूमि की तैयारी के समय अन्तिम जुताई पर प्रति हेक्टेयर 100 कुन्तल गोबर की खाद, 40–50 किग्रा नाइट्रोजन (88–110 किग्रा यूरिया), 50–60 किग्रा फास्फोरस (312–375 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट) एवं 40–45 किग्रा पोटाश (67–75 किग्रा म्यूरेट आफ पोटाश) भूमि में मिला दें।
- जिरेनियम की रोपाई इस माह में भी कर सकते हैं।
- आंवला में फलों की तुड़ाई इस माह के अन्त तक अवश्य कर लें।

**पशुपालन/दुग्ध विकास**

- पशुओं को ठंड से बचायें रखें। रात में उन्हें साये में ही रखें। नीचे पुआल बिछाकर उन्हें मोटा कपड़ा या टाट ओढ़ा दें तथा उन्हें आग से दूर रखें।

- ❖ हरे चारे के साथ दाना भी पर्याप्त मात्रा में दें।
- ❖ खुरपका, मुँहपका रोग से बचाव के लिये टीका जरूर लगवायें।
- ❖ पशुओं में जिगर के कीड़ो (लीवर फ्लूक) से रोकथाम के लिये कृमिनाशक पिलायें।
- ❖ पशुओं व उनके बच्चों को पटेरे की दवा पिलायें।

**मुर्गीपालन**

- ❖ अण्डा देने वाली मुर्गियों को लेयर फीड दें और सीप का चूरा भी दें। बरसीम का हरा चारा भी थोड़ी मात्रा में दे सकते हैं।
- ❖ पेट में कीड़े की दवा पिलाने से पहले तथा बाद में बी कम्प्लेक्स सिरप अवश्य दें।
- ❖ यह देखें कि मुर्गियों को दिन में 15–16 घण्टे प्रकाश मिलता रहे।
- ❖ दिन में 3–4 बार अण्डे एकत्र करें।
- ❖ चूजों को ठंड से बचाने हेतु पर्याप्त गर्मी की व्यवस्था करायें।